अंक : 69

वर्ष : 2015-16
प्रथम छमाही

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्ध-वार्षिक गृहपत्रिका

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

एम पी ई डी ए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,
डाक पेटी सं. 4272, कोच्ची-682036, भारत
दूरभाष: 2323245, फैक्स: 91-484 2313361

मानननीय सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का एमपीईडीए मुख्यालय में आगमन

माननीय सचिव (राजभाषा विभाग) का स्वागत

राजभाषा की उपलब्धियों पर चर्चा

राजभाषा के कार्यांवयन से सम्बंधित सुझाव देते हुए माननीय सचिव (राजभाषा विभाग)

माननीय सचिव (राजभाषा विभाग) का प्रस्थान

दिनांक 7 अगस्त, 2015 को एमपीईडीए – मुख्यालय में माननीय सचिव श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने एमपीईडीए – मुख्यालय में राजभाषा से सम्बंधित किए जा रहे कार्य-कलापों को देखने हेतु एक दौरा किया । इस दौरे में माननीय सचिव (राजभाषा विभाग) महोदय के साथ डॉ. श्री ए. जयतिलक, अध्यक्ष, स्पाइसेस बोर्ड, कोच्ची तथा श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्यांवयन) क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची भी उपस्थित थे। श्री बी. श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए ने उप निदेशक (रा.भा) तथा राजभाषा अनुभाग के सभी कर्मचारियों के साथ प्रवेश-द्वार पर पुष्प-गुच्छ से माननीय सचिव महोदय (राजभाषा विभाग) का स्वागत किया। एमपीईडीए – मुख्यालय के समिति कक्ष में अध्यक्ष महोदया, निदेशक (वि), सचिव तथा सभी विभागों के प्रभारियों के साथ, उप निदेशक (रा.भा) तथा राजभाषा के सभी कर्मचारी एकत्र हुए। उप निदेशक (रा.भा) ने एमपीईडीए – मुख्यालय में राजभाषा से सम्बंधित गतिविधियों, नई उपलब्धियों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किए जा रहे प्रयासों पर एक पीपीटी के माध्यम से जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर सचिव (राजभाषा विभाग) द्वारा दिए गए सुझावों पर अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए ने अपनी सहमति प्रदान की तथा आश्वासन दिया कि सचिव महोदय जी के मार्गदर्शन के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एमपीईडीए संगठन आने वाले दिनों में अपने प्रयासों से सफलता के नए मानदण्ड स्थापित करेगा।

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्ध-वार्षिक गृहपत्रिका

अंक : 69

वर्ष : 2015-16

प्रथम छमाही

संरक्षक
सुश्री लीना नायर, भा.प्र.से., **अध्यक्ष**

मार्गदर्शक
श्री एन. रमेश, भा.दू.से. **निदेशक (विपणन)**

प्रधान संपादक
श्री बी. श्रीकुमार – **सचिव**

संपादक
श्री हिमांशु श्रीवास्तव – **उप निदेशक (रा.भा.)**

○○○○○

सम्पादन सहयोग
श्रीमती मल्लिका उण्णिकृष्णन – हिन्दी अधिकारी
श्रीमती तुलसी नायर – वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती मृणालिनी पी आरेकर - वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती संगीता जी – कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती मीरा वेंकटेश - कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती उषा पी – राजभाषा लिपिक
श्रीमती सिंधु ए एस – हिन्दी टंकक

मुख्य पृष्ठ सज्जा
श्री चन्द्र मोहन - वरिष्ठ छायाकार

○○○○○

पत्राचार का पता

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,
कोचीन - 682 036
दूरभाष - 91 - 484 - 2323245
फैक्स - 91 - 484 - 2313361

अनुक्रमणिका

पृ. सं.

- अध्यक्ष महोदया जी का संदेश 3
- निदेशक (विपणन) महोदय जी का संदेश 4
- सचिव महोदय जी का संदेश 5
- सम्पादक की कलम से 6
- एमपीईडीए – एक संक्षिप्त परिचय 9
- उपलब्धियों का वर्ष 2014-15 10
- एमपीईडीए की नई वेबसाइट का विमोचन – एक झलक 11
- राष्ट्र-बंधन भाषा - राजभाषा हिन्दी 12
- टूटकर जुड़ने वाला अनोखा जीव 14
- सी बास - भारतीय जलकृषि में कल्चर की वृद्धि करना समय की मांग - श्री मंगेश गावडे 15
- पंच महाभूत की रक्षा - श्री किशोर कुमार वाणिया 17
- जल का महत्व - श्रीमती मृणालिनी परेश आरेकर 18
- राजभाषा गतिविधियाँ 19
- मलेरिया से जूझने के लिए ओडिशा में गंबूसिया मत्स्य कृषि का प्रारम्भ - श्रीमती तुलसी नायर .. 27
- मुंशी प्रेमचंद - एक परिचय 29
- आहार – 2015' में एमपीईडीए 32
- बेपोर, केरल में नेटफिश द्वारा आयोजित 'वन वीक एट ए हॉर्बर' 33
- एमपीईडीए - क्लब की वित्तीय वर्ष 2014-15 में गतिविधियां 34
- एमपीईडीए की सेवा निवृत्तियां 37
- एमपीईडीए की नई भर्तियाँ 38
- जीवन एक माया-जाल - श्री दिनेश कुरूपात 39
- झींगा, पनीर और टमाटर के साथ सेमिया पास्ता 40

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

लीना नायर, भा.प्र.से.

संदेश

अध्यक्ष

सफलता की चाह व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, परंतु कोई भी व्यक्ति, संगठन अथवा राष्ट्र, सच्ची कर्मनिष्ठा एवं श्रम के आधार पर ही सफलता और प्रगति प्राप्त कर सकता है। आज ' समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण' ने समुद्री उत्पाद के निर्यात के क्षेत्र में अपनी जो पहचान बनाई है वह इसी विचारधारा एवं तदनुरूप व्यवहार के कारण संभव हो पाया है। वित्त वर्ष 2014-15 के दौरान, समुद्री उत्पादों का निर्यात अपने सर्वोच्चतम स्तर 5511.12 मिलियन डॉलर तक पहुँच गया । इस सफलता का श्रेय हमारे संगठन के कर्मठ और निष्ठावान कर्मचारियों एवं अधिकारियों को जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया। इसका कारण यह था कि हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में सारे देश में पहले से ही प्रचलित थी। वैसे हमारे देश के विभिन्न राज्यों में उनकी अपनी भाषाओं का प्रयोग भी हिंदी तथा अंग्रेज़ी के अतिरिक्त होता है, परन्तु फिर भी हिन्दी की संप्रेषणीयता अन्य सभी भारतीय भाषाओं और अंग्रेज़ी की तुलना में बहुत अधिक है। इसी कारण हिंदी एक सशक्त सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होते हुए सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बाँधे हुए है। साथ ही, संसार की सभी भाषाओं की ध्वनियों को उत्पन्न करने की अनोखी क्षमता हिंदी में है। इसीलिए यह एक वैज्ञानिक भाषा है तथा इसकी लिपि भी वैज्ञानिक है।

विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का प्रमुख दायित्व उन वरिष्ठ अधिकारियों का है, जिनका अनुसरण प्रत्येक कर्मचारी करता है। अत: आशा है कि अपने कार्यालयी कार्य में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करके वे इसे एक नई दिशा प्रदान करेंगे। बस आवश्यकता है कि इस मनोवृत्ति को विकसित करने की, जो किसी भी कार्य की सफलता का प्रमुख आधार होती है।

मैं 'सागरिका' पत्रिका के 69वें परिवर्तित अर्धवार्षिक अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल के सदस्यों को शुभकामनाएं देती हूँ, जिनके प्रयासों से इस पत्रिका को वर्तमान स्वरूप दिया जा सका है।

लीना नायर

(लीना नायर)

संदेश

निदेशक (विपणन)

योग्यता का अभिप्राय केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं होता बल्कि योग्यता व्यक्ति में दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, निष्पादन आदि को भी प्रतिबिंबित करती है। हमारे संगठन के कर्मचारी इन विशेषताओं से सम्पन्न हैं और इसी विशेषता के सहारे समुद्री उत्पाद निर्यात की अनेक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर पाने में सफल हैं।

हिन्दी की सरलता और बोधगम्यता पर किसी विद्वान ने कहा है 'हिन्दी का ज्ञान न होने पर भी आप भारत को देख सकते परंतु हिन्दी-ज्ञान के अभाव में आप भारतीयों के दिलों तक नहीं पहुँच सकते। भारत सरकार सहित हम सबका प्रयास यही होना चाहिए कि हम हिन्दी के माध्यम से हर भारतीय तक पहुँचें। हमारा संगठन हर कर्मचारी तक हिन्दी को पहुँचाने के लिए वचनबद्ध है। इसके लिए हिन्दी का प्रशिक्षण देने से लेकर हिन्दी में काम करने तक के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं है और कुछ कर्मचारी इसका लाभ भी उठा रहे हैं परंतु हमें कुछ तक नहीं, अपितु सब तक पहुँचाना है। इस कार्य के लिए सबका सहयोग अपेक्षित है। अल्प सूत्रपात महान उपलब्धि का कारण बनता है।

हमारे लिए संतोष ही नहीं बल्कि गर्व की बात है कि हमारा संगठन इस दिशा में भी नवीन प्रयासों की ओर अग्रसर है तथा संगठन की अर्धवार्षिक गृहपत्रिका 'सागरिका' अपने नवीन रूप में आ रही है। यह राजभाषा के बढ़ते कदम की ओर साफ इशारा है। हमें इसे बरकरार रखना है। संगठन द्वारा प्रकाशित 'सागरिका' पत्रिका हिन्दी के विस्तार की अहम कड़ी है। मैं पत्रिका की सफलता के प्रति शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

(एन० रमेश)
भा.दू.से.

संदेश

सचिव

जब किसी संगठन में प्रशासनिक एवं तकनीकी क्षेत्र से जुड़े कार्मिकों के वैचारिक समीकरण में समानता होती है तब संगठन का बहुआयामी विकास होता है। 'समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण' एक साधन संपन्न और ज्ञानाधारित संगठन है। संगठन में उपलब्ध साधन और कर्मचारियों द्वारा अर्जित ज्ञान के प्रयोग से हमारा संगठन किसी भी प्रकार की तकनीकी और प्रौद्योगिकी चुनौतियों का सामना करने में तत्पर और सक्षम भी है।

राजभाषा के विकास संगठन के विकास से पृथक नहीं है। संगठन के प्रति निष्ठा का पालन करने के साथ-साथ हमें राजभाषा के कार्यान्वयन से जुड़े नियमों का भी लगन व निष्ठा से पालन करना है। मैं एक बात पुरजोर तरीके से कहना चाहूँगा कि जब कोई चीज़ थोपी जाती है तो उसका प्रतिकार होता है। थोपी गई चीज़ में स्थायित्व नहीं होता परंतु हृदय से स्वीकार की गई चीज़ में स्थायित्व होता है उसके परिणाम उत्साहवर्धक होते है। हिन्दी में अनेक कार्यक्रमों के आयोजन के पीछे हमारा उद्देश्य यही है कि कर्मचारी इन्हें अंगीकृत करें और राजभाषा की प्रगति में सहयोग दें। हिन्दी के-प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे अनेक कार्यों में पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। दअसल, यह एक मंच है जहां कर्मचारी अपनी लेखन प्रतिभा उजागर करने के अलावा विचारों को वाणी प्रदान कर सकते हैं। जरूरत है तो बस एक संकल्प और इच्छाशक्ति की।

आशा है कि राजभाषा समर्पित गृहपत्रिका 'सागरिका' अपने उद्देश्य को पूरा करने के साथ ही कार्मिकों को प्रेरणा प्रदान करेगी और संगठन में हिंदी के चतुर्दिक विकास के वातावरण के सृजन में अहम भूमिका का निर्वाह करेगी।

मैं पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(बी श्रीकुमार)

संपादक की कलम से.............

उप निदेशक (राजभाषा)

“समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण” की परिवर्तित अर्धवार्षिक गृहपत्रिका 'सागरिका' का 69 वां अंक पाठकों के हाथों में समर्पित है। 'सागरिका' के इस अंक में हमने अपने संगठन की गतिविधियों के साथ-साथ कार्मिकों से प्राप्त सुरुचिपूर्ण पठनीय सामग्री को यथा संभव शामिल करने का प्रयास किया है। पत्रिका के इस अंक की सफलता के लिए योगदान देने वाले प्रत्येक प्रभाग तथा लेखकों द्वारा प्रदत्त सामग्री के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

चिंतन, प्रयोग और लेखन से ही भाषा का विस्तार संभव होता है। हिन्दी भाषा के विस्तार में दक्षिण भारत के हिंदीत्तर भाषी विद्वानों का योगदान प्रशंसनीय और अविस्मरणीय रहा है और इसी कारण से सिर्फ भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि हिन्दी विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने के लिए अग्रसर है।

मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका के आगामी अंकों में और भी रोचक एवं मौलिक रचनाओं का समावेश होगा और पाठकों द्वारा सराही जाएगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

(हिमांशु श्रीवास्तव)

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण - मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य

सुश्री लीना नायर, भा.प्र.से.,
अध्यक्ष - स उ नि वि प्रा
एवं
अध्यक्ष - राभाकास

श्री एन. रमेश, भा.दू.से.,
निदेशक (वि)
सदस्य-राभाकास

श्री बी. श्रीकुमार ,
सचिव
सदस्य-राभाकास

श्री जी. रतिनराज
संयुक्त निदेशक (जलकृषि)
सदस्य-राभाकास

श्री जी. राजेन्द्रन
उप निदेशक (कार्मिक)
सदस्य-राभाकास

श्री टी.आर. जिबिन कुमार
उप निदेशक (प्रचार)
सदस्य-राभाकास

श्रीमती उषा सिंह
प्रणाली विश्लेषक
सदस्य-राभाकास

<u>विषेश आमंत्रित सदस्य</u>
श्रीमती सुनीता देवी यादव
उप निदेशक (कार्यान्वयन),
क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची

श्री हिमांशु श्रीवास्तव
उप निदेशक (राजभाषा) एवं
सदस्य संयोजक-राभाकास

एमपीईडीए के अध्यक्ष

श्री मोहम्मद यूनुस (23.08.1972 से 23.01.1973)

श्री टी॰पी॰के॰ नायर (24.01.1973 से 16.02.1977)

श्री एस॰ गोपालन (16.03.1978 से 08.08.1979)

श्री आर॰सी॰ चौधरी (17.09.1979 से 20.07.1982)

श्री एस॰एन॰ राव (24.06.1983 से 06.01.1984)

श्री टी॰के॰ए॰ नायर (25.09.1984 से 02.06.1989)

श्री सी॰टी॰ सुकुमारन (16.11.1989 से 27.09.1992)

श्री के॰बी॰ पिल्लई (03.12.0993 से 31.12.1998)

श्री के॰जोस सिराक (01.02.1999 से 14.04.2004)

श्री जी॰ मोहनकुमार (15.04.2004 से 14.04.2009)

सुश्री लीना नायर, भा॰प्र॰से॰(19.05.2009 से अबतक)

इससे पहले कि सपने सच हों आपको सपने देखने होंगे। - डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

एमपीईडीए - एक संक्षिप्त परिचय

भारतीय समुद्री खाद्य उत्पादों के बाजार को विदेशों में बढ़ावा देने हेतु भारत के समुद्री खाद्य उद्योग को एक संगठन की आवश्यकता थी। भारत सरकार ने इसी आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु सन् 1961 में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास संवर्धन परिषद नामक एक संगठन की स्थापना की। एमपीईपीसी ने समुद्री उत्पादों का संवर्धन तथा विकास कार्य सफलता से निभाया और यह भारत सरकार का अविभाज्य अंग बन गया। उन दिनों कोचीन पत्तन के द्वारा 60% समुद्री खाद्य निर्यातों का संभरण, एमपीईपीसी के लिए एक मुख्य आधार बन गया।

इसी अध्ययन पर आधारित भारत सरकार ने दिनांक 20 अप्रैल 1972 को संसद के एक अधिनियम के तहत "समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण" (एमपीईडीए) की स्थापना की। इसके पश्चात एमपीईपीसी ने स्वैच्छिक परिसमापन कर लिया और सभी कर्मचारियों को दिनांक 24 अगस्त 1972 से एमपीईडीए में अवशोषित कर दिया गया। एमपीईडीए को समुद्री खाद्य के निर्यात को बढ़ाने का कार्य दिया गया। व्यावसायिक रूप में ज्ञात मात्स्यिक उत्पादों जैसे – श्रिम्प, झींगा, लॉब्स्टर, केकेड़ा, मत्स्य, शेलफिश, अन्य जलीय जीवों तथा पौधों या अन्य कोई मद जो समुद्री उत्पादों के अधिनियम के अंतर्गत आता हो, इस संगठन द्वारा उसके विकास तथा निर्यात को बढ़ावा देने तथा आवश्यक संसाधन के लिए सभी प्रकार की कार्रवाई करने की परिकल्पना भी की जाती है।

इस कार्य ने एमपीईडीए को देश से निरंतर गुणवत्तापूर्ण समुद्री खाद्य निर्यात सुनिश्चित करने हेतु अपेक्षित सभी उपाय करने में सशक्त बनाया। कच्चे माल की बढ़ी आवश्यकता ने एमपीईडीए को केवल गहरे समुद्र मत्स्य-पकड़ ही नहीं बल्कि जलकृषि का उत्तरदायित्व भी दिया, इसके अलावा एमपीईडीए को भविष्य में देश से समुद्री खाद्य निर्यात की रक्षा तथा बढ़ावा देने हेतु अपने लिए कोई भी मानक निर्धारित करने का अधिकार भी दिया गया। इसे समुद्री उत्पादों का निरीक्षण, कच्चा माल, मानकों का स्थिरीकरण व विनिर्देशों, प्रशिक्षण, विनियमन, और विदेशों में समुद्री खाद्यों के विपणन हेतु आवश्यक कदम उठाने के लिए भी सशक्त बनाया गया।

यदि संक्षेप में बताया जाए तो एमपीईडीए पूरी तरह से समुद्री खाद्य उद्योग के समग्र विकास के लिए केंद्रीय अभिकरण के रूप में अपनी क्षमता से कार्य कर रहा है।

एमपीईडीए की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार ने मछली पकड़ने की नौकाओं, भंडारण परिसर, प्रसंस्करण संयंत्रों और वाहनों के लिए नए मानकों को अधिसूचित किया। एमपीईडीए के मुख्य रूप से कार्य क्षेत्र के पांच बिंदु यथा मत्स्य पकड़, जलकृषि, प्रसंस्करण बुनियादी सुविधाओं एवं मूल्य संवर्धन, गुणवत्ता नियंत्रण और बाजार संवर्धन हैं।

एमपीईडीए की भूमिका एवं ज़िम्मेदारियां

1. समुद्री खाद्य निर्यात व्यापारों के लिए बुनियादी सुविधाओं का पंजीकरण।
2. व्यापार सम्बंधी सूचनाओं का संग्रह एवं प्रसारण।
3. विदेशी बाजारों में भारतीय समुद्री उत्पादों को बढ़ावा देना।
4. उत्तम गुणवत्ता के साथ उत्तम संरक्षण तथा आधुनिक प्रसंस्करण के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए सहायता देने हेतु उद्योग के लिए महत्वपूर्ण योजनाओं पर कार्यान्वयन।
5. मत्स्य प्रजाति पालन के हत्चेरी/मत्स्य पालन जहाज का विकास, नई खेती को विकसित करना, प्रौद्योगिकी का उन्नयन के निर्यात उत्पादन को बढाने हेतु कृषि को बढ़ावा देना।
6. मत्स्य पकड़ प्रशिक्षण, सन्युक्त उद्यमों का उन्नयन और उपकरण की स्थापना के माध्यम से गहरे समुद्र के मत्स्य पकडने की परियोजना को बढ़ावा देना।
7. बाज़ार की गतिविधियों का प्रचार प्रसार करना।

उपलब्धियों का वर्ष 2014-15
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

वर्ष 2014-15 में एक मिलियन टन समुद्री उत्पादों के निर्यात से 5.5 अरब अमरीकी डॉलर की विदेशी मुद्रा का योगदान

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक सांविधिक निकाय है। एमपीईडीए भारत से समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए नोडल एजेंसी है। एमपीईडीए की मौजूदगी सभी तटवर्ती राज्यों में है और अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से निर्यात संवर्धन/जलकृषि उत्पादन के लिए अपनी विकासात्मक योजनाओं को लागू कर रहा है।

वित्त वर्ष 2014-15 के दौरान, समुद्री उत्पादों का निर्यात अपने सर्वोच्चत्तम स्तर 5511.12 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया। समुद्री उत्पाद निर्यात ने, मात्रा, रुपए मूल्य और अमेरिकी डॉलर तीनों ही संदर्भ में पिछले सभी रिकॉर्डों को पीछे छोड़ा है। ₹33441.61 करोड़ एवं 5511.12 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का 10,51,243 मेट्रिक टन का समुच्चित निर्यात किया गया। पिछले वर्ष की तुलना में, समुद्री खाद्य निर्यात ने मात्रात्मकता के रूप में 6.86%, रुपए में 10.69% एवं अमेरिकी डॉलर उपार्जन में 10.05% की वृद्धि दर्ज की। वृद्धि, अंतर्राष्ट्रीय बाजार की स्थितियों के तहत देखी जा सकती है। यूरो के अवमूल्यन, चीन की कमजोर आर्थिक स्थिति, येन और भारतीय मुद्रा के अवमूल्यन, पिछले वर्ष की तुलना में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में आपूर्ति की स्थिति में सुधार के परिणामस्वरूप, भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात टोकरी के एक प्रमुख खाद्य, श्रिम्प की आयात कीमतों में लगातार गिरावट आई है।

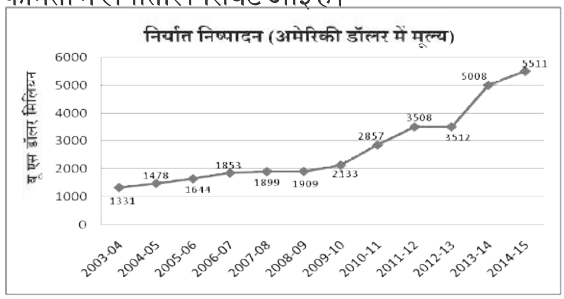

प्रमुख पत्तनवार निर्यात

समुद्री उत्पाद 30 विभिन्न समुद्री/वायु/भू पत्तन के माध्यम से निर्यात किया गया। पिछले वर्ष के दौरान इसी अवधि की तुलना में विजाग, कोच्ची, जेएनपी, कोलकाता, ट्यूटीकोरिन, कृष्णापट्टनम, और मंगलौर से निर्यात में सुधार हुआ। मात्रात्मकता के संदर्भ में प्रमख पत्तन है पीपाःवान्ं (25.27%) और अमेरिकी डॉलर के मामले में प्रमुख बंदरगाह है विजाग (22.59%)।

2015-16

एमपीईडीए द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए 6.6 अरब डालर के लक्ष्य की परिकल्पना की गई है। उम्मीद है कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने में एल वन्नामी श्रिम्प के उत्पादन में वृद्धि, गुणवत्ता नियंत्रण उपायों और मूल्यवर्धित वस्तुओं के उत्पादन के लिए बुनियादी सुविधाओं में वृद्धि सहायक रहेंगे।

एमपीईडीए की नई वेबसाइट का विमोचन - एक झलक

श्रीमती निर्मला सीतारामन, माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री (दाएं)
एवं सुश्री लीना नायर, भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए (मध्य में)

एमपीईडीए की नई वेबसाइट का विमोचन – एक रिपोर्ट

दिनांक 9 जुलाई, 2015 को एमपीईडीए – व्यापार संवर्धन कार्यालय, नई दिल्ली में श्रीमती निर्मला सीतारामन, माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री (संकाय प्रभारी) के कर कमलों द्वारा एमपीईडीए की नई वेबसाइट तथा मोबाइल एप्लिकेशन का विमोचन किया गया। एमपीईडीए की पूर्ण वेबसाइट अब हिन्दी के अलावा अन्य देशीय तथा अंतर्देशीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। एमपीईडीए श्रिम्प कृषि के विकास में सुधार लाने हेतु एक मुख्य एजेंसी के रूप में कार्यरत है और यह कृषि के उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु जलकृषि कृषकों को तकनीकी एवं वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है।

वेबसाइट के विशेष आकर्षण निम्नवत है :-

1. एसएमएस या मिस्ड कॉल द्वारा श्रिम्प के मूल्य की सूचना देना।
2. एमकृषि - जलकृषि संचालन हेतु मोबाइल एप्लिकेशन।
3. निर्यातकों के लिए एमपीईडीए ऑन-लाइन पंजीकरण पोर्टल
4. एमपीईडीए पोर्टल - www.mpeda.gov.in

उपरोक्त प्रथम दो मद मोबाइल पर उपयोग के लिए बनाए गए हैं। इससे जलकृषि कृषक कहीं से भी इंटरनेट सम्पर्क द्वारा सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। तीसरा तथा चौथा मद निर्यातकों तथा अन्य हितधारकों की सहायता के लिए बनाया गया है।

राष्ट्र-बंधन भाषा राजभाषा हिन्दी

भारत की भाषायी स्थिति और उसमें हिन्दी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन चुकी है। हिंदी की भाषागत विशेषता भी यह है कि उसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्य भाषाओं के अपेक्षा ज्यादा सुविधाजनक और आसान है। हिंदी भाषा में एक विशेषता यह भी है कि वह लोक भाषा की विशेषताओं से संपन्न है। विशेष ध्यान देने की बात यह है कि हिंदी में आज विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य लाया जा चुका है। भारत की भाषायी विविधता के बीच हिंदी की भाषायी पहचान मुख्यत: हिंदी है। भारत के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के आधार पर बने नगरों और महानगरों में भारत की राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संस्कृति का स्वरूप देखने को मिलता है। इसी प्रग में कहना चाहता हूं कि यदि हिंदी-क्षेत्र के राज्य औद्योगिक रूप से और ज्यादा विकसित होते तो राष्ट्रीय एकता और भाषायी एकता का आधार और विस्तृत और मजबूत होता। लेकिन आज की स्थिति में भी भारत में हिंदी की जो राष्ट्रीय भूमिका है, उतनी भी उसके अंतरराष्ट्रीय महत्व को महसूस कराने में समर्थ है।

साम्राज्यवाद ने खुद मनुष्य का जो व्यापार अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में किया, उसके फलस्वरूप भारत से बड़ी तादाद में मजदूर दूसरे देशों में ले जाए गए। मारीशस, फ़िजी, दक्षिण अफ्रीका, के अन्य कई देश, ब्रिटिश गायना, त्रिनिदाद, सूरीनाम, न्यूजीलैंड आदि देशों में जो बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग हैं, वे मुख्यत: हिंदीभाषी हैं अथवा यह कहें कि वे हिंदी जानते हैं, हिंदी पढ़ते-लिखते हैं। नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार (वर्मा) में तो स्वभावत: हिंदी भाषी जनता की संख्या बहुत बड़ी है। आधुनिक युग में नई संचार-व्यवस्था, आवागमन के नए साधनों की उपलब्धता और जीवन की नई जरूरतों से प्रेरित होकर इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस और यूरोप के अन्य अनेक देशों में भी भारत से जा बसे लोगों में हिंदीभाषी लोग आज रह रहे हैं। हिंदीभाषियों को अथवा हिंदी जानने वालों की यह विशाल संख्या हिंदी के अंतरराष्ट्रीय संपर्क का साक्षात्कार कराती है। संख्या की दृष्टि से हिंदी दुनिया की तीन बड़ी भाषाओं में एक है, शेष दो हैं अंग्रेजी और चीनी। कुछ लोग तो कहते हैं कि हिंदी जाननेवालों की संख्या दुनिया में अंग्रेजी जाननेवालों से ज्यादा है।

आंकड़ों के खेल से अलग हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने वाले कई तथ्य और हैं ओर वे तथ्य ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। एक बात तो यह है कि हिंदी भाषा के साहित्य ने पिछली एक सदी में बड़ी तेजी से विकास किया है, वह कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना तथा चिंतनपरक साहित्य के क्षेत्रों में इतनी विकसित हुई है, इतनी ऊपर उठी है, कि आज वह किसी भी भाषा के श्रेष्ठ साहित्य का मुकाबला कर सकती है। प्रेमचंद्र, निराला, जयशंकर प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, राहुल सांस्कृत्यायन, मुक्तिबोध, नागार्जुन आदि के लेखन के अनुवाद दुनिया की विभिन्न भाषाओं में हुए हैं। इस प्रक्रिया से हिंदी के जरिए दुनिया की जनता से भारत की जनता का संवदेनात्मक संबंध कायम हुआ है। यह संबंध रचनात्मक और संवेदनात्मक तो है ही, सांस्कृतिक विनियम का एक रूप भी प्रस्तुत करता है। विगत साहित्य में भारतीय चेतना का प्रतिनिधित्व सबसे अधिक हिंदी ही करती है। इतना ही नहीं, हिंदी के माध्यम से दूसरी भाषाओं के साहित्य का परिचय भी विश्व का हिंदी-संप्रदाय प्राप्त कर ता है। इस प्रकार आज की परिस्थिति में हिंदी की एक अंतरराष्ट्रीय बिरादरी विकसित हो रही है।

उपयुक्त तथ्यों और बातों से अलग अत्यंत महत्वपूर्ण बात यह है कि आज के वित्तीय पूंजीवाद ने जो विशाल विश्व बाजार विकसित किया है, उसमें भारत का

विशेष स्थान है। भारत में पूंजीवाद का विकास अवरोधों के, बीच हुआ है फिर भी देश के आजाद होने के बाद पूर्व सोवियत संघ तथा समाजवादी देशों की मदद से राष्ट्रीय पूंजीवाद का आर्थिक आत्मनिर्भरता का जो विकास हुआ उससे भारत में एक बड़े मध्य वर्ग और नव धनाढ्य वर्ग का विकास हुआ है, जिसकी आबादी कम से कम पच्चीस करोड़ है। अमेरिका की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रतिनिधियों तथा उसके विचारकों और सिद्धांतकारों ने कुछ साल पहले भारत के बारे में एक सेमिनार आयोजित करके इस बात पर विचार किया कि भारत में उनके लिए क्या गुंजाइश है। उनका निष्कर्ष यह था कि भारत मध्यवर्ग, उच्च वर्ग और नवधनाढ्य वर्ग के पच्चीस-तीस करोड़ लोग उनके माल का बाजार बनने के लिए काफी हैं। अब यह देखें कि पच्चीस-तीस करोड़ में हिंदीभाषियों की संख्या बीस करोड़ से कम तो नहीं है। अत: इस जनता को अपना उपभोक्ता बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करनेवाली कंपनियों के प्रतिनिधियों एवं एजेंटों को हिंदी सीखनी है। यदि भारत का इतना आर्थिक विकास न हुआ होता, तो हिंदी का रुतबा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इतना न होता, जितना आज हमें अनुभव होता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां और इजारेदार घरानों को अपने माल के प्रचार के लिए हिंदी का सहारा लेना पड़ता है। उद्योग का एक बड़ा क्षेत्र है फिल्म और इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम। हिंदी फिल्म और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में हिंदी चैनल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रसार करके हिंदी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजार बनाने की भूमिका अदा करते हैं। यह है हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका का ठोस आधार, जिस पर खड़ी होकर हिंदी अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन रही है। ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव के अवशेष और अमेरिकी साम्राज्य की वर्तमान दबंगई के कारण यह बात फैलाई जाती रही है कि अंग्रेजी विश्व भाषा है या विश्व बाजार की भाषा है। यह अर्द्धसत्य है। सच्चाई को यों कह सकते हैं कि अंग्रेजी एक महत्वपूर्ण विश्व भाषा है और विश्व बाजार की भी एक महत्वपूर्ण भाषा है। लेकिन विश्व बाजार में संपर्क तो चीनी, जापानी, फ्रांसीसी, जर्मन, स्पानी के साथ ही हिंदी के माध्यम से भी होता है। भारत के फैलते हुए भूमिका बाजार और दक्षिणपूर्व एशियाई देशों के संगठन की बढ़ती हुई की पृष्ठभूमि में हिंदी के महत्व और भूमिका में भी वृद्धि होती जा रही है।

वैज्ञानिक-तकनीकी क्रांति के इस दौर में यह उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक-तकनीकी कर्मियों की संख्या की दृष्टि से दुनिया में भारत का तीसरा स्थान है। ये तकनीकी कमी दुनिया के विभिन्न देशों में काम करते हैं और हिन्दी के प्रसार की भूमिका अदा करते हैं। लेकिन इस प्रसंग में एक बात और उल्लेखनीय है। इलेक्ट्रॉनिक संचार-माध्यम और कम्प्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी ने धीरे-धीरे अपनी जगह बना ली है। इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिंदी का प्रसार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिन्दी क्षेत्र में इलेक्ट्रोनिक यंत्रों का बाजार भी फैल रहा है। इससे हिन्दी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है। ये ही बातें हैं, जिनको ध्यान में रखकर अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने कहा था कि भारत को समझना है, तो हिंदी सीखो। यह हिन्दी के प्रति या भारत के प्रति बुश की उदारता नहीं थी, बल्कि अपनी नवउपनिवेशवादी योजना को कारगर बनाने के लिए हिंदी का उनके द्वारा इस्तेमाल किया जाना था। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हिंदी हमारे चिंतन की, हमारे सपनों की, हमारे प्रतिरोध की भाषा बनकर हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्वायत्तता की रक्षा की भाषा बनकर हमें ताकत देती है।

अंतिम बात यह है कि आज भूमंडलीकरण यानी अमेरिकीकरण के इस दौर में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता और विकास के साधनों की रक्षा के संघर्ष में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस संघर्ष में भारत की भूमिका के साथ हिंदी भी अपनी ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगी, ऐसी संभावना है। भारत सरकार में हावी नौकरशाही यद्यपि नौकरशाही यद्यपि भारत को और हिंदी को भी अपनी वाजिब भूमिका अदा करने से रोकती है, उसकी भूमिका को कुंठित करती है। इसके बावजूद जनता का और राष्ट्रीय जरूरतों के आग्रहों का दबाव नौकरशाही को नियंत्रित करता है और हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका का उजागर करता है।

हाइड्रा-टूटकर जुड़ने वाला अनोखा जीव

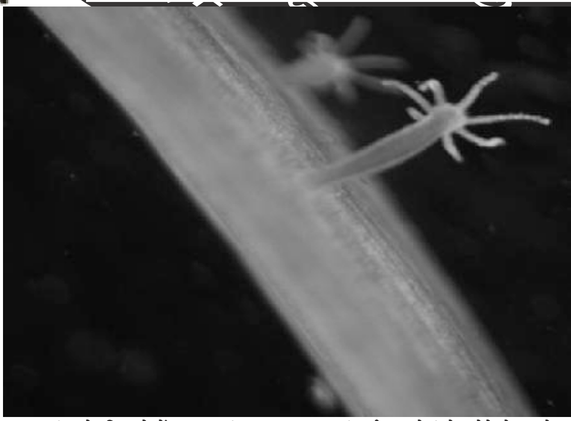

एक झील के छिछले में एक टहनी पर आराम करती हुई एक रोटी के छोटे से टुकड़े जितनी बड़ी हाइड्रा।

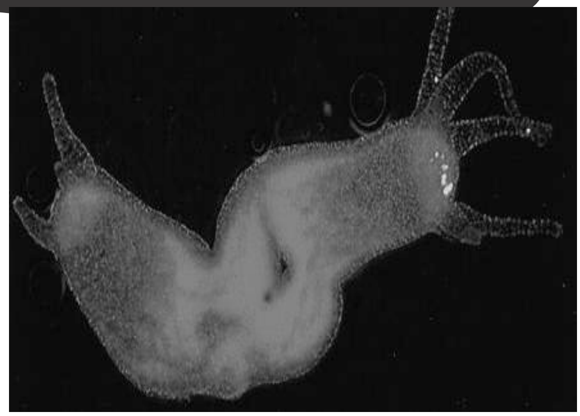

दो नव हाइड्रा का गठित होना। हरे रंग की बिंदुए सिर की कोशिकाएँ हैं

यद्यपि हम छोटे तालाब के हाइड्रा के बारे में ज्यादा नहीं सोचते, इसे एक अविश्वसनीय रहस्यपूर्ण महाशक्ति प्राप्त है। यह अपने छोटे जाल को विस्तारित करने और भोजन को पाचन करने में अपना सारा दिन बिताती है, जब इसे अपनी दिनचर्या में समस्या होती है तो यह प्रतिक्रिया देने के लिए भी तैयार रहती है। इसकी चाल-ढाल को समझने के लिए बस इसके कई टुकड़े कर दीजिए।इसकी अनोखी शक्ति तभी दिखेगी जब आप इसकी तरह सोचेंगे। कल्पना करें कि आप हाइड्रा है और आपको तोड़ा जा रहा है। अंत में एक कटोरे के तल में आपके कणों के सूप के अलावा कुछ बाकी नहीं बचा है। पर आप मरे नहीं और ना ही मरेंगे। यहाँ आकर बातें दिलचस्प हो जाती है। आपकी कोशिका और कण रेंगना शुरू कर देंगे। छोटे टीले के रूप में एक साथ होकर एक दूसरे से जमने लगेंगे। यह एक-दूसरे के साथ जम-जमकर बढ़ती ही जाएंगी और अपना नया आकार ले लेंगी। शरीर के सभी छोटे कण वापस बढ़ जाते हैं और आप पुनः पहले की तरह हो जाते है। पर यह कैसे हो जाता है?

कैसे एक हाइड्रा अपना पुनः निर्माण कर लेता है? शायद ये किसी सिनेमा में देखा होगा। अलरिच टेक्नौ नामक एक वैज्ञानिक ने हाइड्रा को पीसने के बाद इसी विषय को जानने की कोशिश की। वैज्ञानिक ने अपने वैज्ञानिकों की टीम के साथ इन छोटे तालाबों के जीवों के बारे में कुछ असाधारण खोज की है। जीवित रहने का रहस्य उसके सिर की कोशिकाएँ है। यदि आप एक हाइड्रा हैं, और आपका सिर स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता। केवल एक मुँह और कुछ कण होते है। लेकिन यह पता चलता है कि चेहरे पर केवल आंखे नहीं जुड़ रही थी बल्की आपका सिर शरीर के बाकी अंगों के लिए मिलिटरी कमांड सेंटर बनी हुई थी, जैसे की सेल्लुलार से आपके शरीर के अन्य भागों को आदेश दे रहा हो कि किस जगह जाना है और क्या बने रहना है। पर यह सब आपको अलग करने से पहले की बातें थी। अब आपका सिर पूरी तरह से एकीकृत है। यदि कुछ कोशिकाएं अपने आप को सिर की कोशिकाओं में गिनते है या ऐसा व्यवहार करते है (चाहे वे हो या न हो) तो यही काफी होता है जिससे सारी कोशिकाओं को एक नए शारीर की स्थापना करने के लिए मार्गदर्शन मिलता है।

24 घंटे

96 घंटे

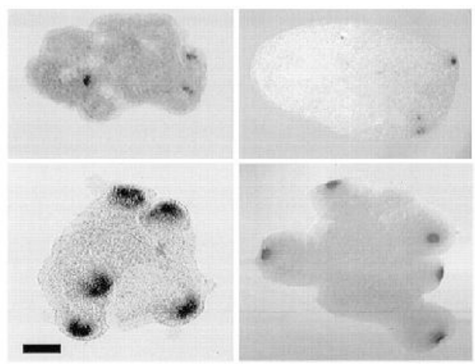

हाइड्रा अणु 24 घंटो बाद (उपरोक्त चित्र) एकत्रित हुए और 96 घंटों बाद नया हाइड्रा आकार लेता हुआ (निचला चित्र)। नीले रंग की कोशिकाएं अब की नई कमाण्ड सेंटर हैं।

सी बास (जिताडा) (lates calcarifer) भारतीय जलकृषि में कल्चर की वृद्धि करना समय की मांग

खारे पानी जलकृषि में मुख्य रूप से अब तक भारत में झींगा की खेती करने के लिए ध्यान केंद्रित किया गया है। लेकिन लगातार बीमारी फैलने और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कम ब्याज दर के कारण पी.वन्नमई किसानों को झींगा खेती के विकल्प तलाश रही है, जो भारी प्रारंभिक निवेश के साथ-साथ प्रयासों और खतरे पर पर्याप्त रिटर्न नहीं दे रहा है। इसीलिए खारे पानी जल के कृषक झींगा कृषि के लिए विकल्प तलाश कर रहे हैं। उष्ण कटिबंधीय देशों में सी-बास एक आर्थिक रुप से महत्वपूर्ण खादय मछली परिवर्तन के लिए उपयुक्त प्रजाति हो सकती है। खारा पानी जलकृषि क्रेंन्द्रीय संस्थान (सीआईबीए) ने पहले ही हैचरी तकनीक विकसित की है और वे सी-बास संवर्धन के उद्यमियों के समान आकार के हैचरी के बीज दे रहे हैं। सी-बास संवर्धन खुले खेतों में या पिंजरों में किया जा सकता है। हाल ही में राजीव गांधी केंद्र में लगभग 12 टन/ हेक्टर सी-बास का उत्पादन किया गया जहाँ उन्होनें सी-बास को खारे पानी फार्म में पिंजरे में पाला था।

मत्स्य खेती से झींगा खेती में तब्दीली करने के लिए किसानों को विशेषज्ञ व्यक्ति या अनुसंधान संस्थानों से इस संबंध के संवर्धन के पहलू, मुख्य निगरानी घटक एवं नेमी नमूने जैसी बुनियादी जानकारी लेनी आवश्यक हैं। सी-बास की स्वजातिभक्षी/नरभक्षी प्रकृति के कारण उसके मत्स्य कल्चर को लगातार नमूने एवं ग्रेडिंग जरूरी है। इस खतरे को कम करने के लिए अल्पकालीन छोटे मत्स्यों को पालने के लिए इन्हें 15 सेंटी मीटर या 6 इंच के आकार के होने तक 90 दिनों के लिए कंक्रीट टैंक या प्लास्टिक पूल में रखते हैं। समय अवधि के भीतर आप निशानेबाजों को (जल्द बढ़नेवाली/आक्रमक मछलियों) को विभाजित करें जिससे आपको आसानी से अन्य स्टॉक प्रबंधन में मदद मिलेगी। खेतों में पिंजरों का प्रयोग करना चिकित्सकों के लिए फायदेमंद होता है, जिससे अलग-अलग पिंजरों में विभिन्न आकार की मछलियाँ रखने से उनका राक्षसपन / नरभक्षीपन कम या खत्म होगा। पिंजरों की संख्या मछलियों में वृद्धिऔर आकार विविधता के हिसाब से बढायी जा सकती है।

मंगेश गावडे, क्षेत्र पर्यवेक्षक
क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

प्रारंभिक टैंक या प्लास्टिक पूल जहाँ अति छोटे (फ्राई) या इनसे थोडे बडे (फिंगरलिंग्स) के पालन के लिए, हम मछलियों के आकार के हिसाब से अलग-अलग आकार की झींगा या झींगा फ़ीड का उपयोग कर सकते हैं। तालाब या पिंजरे के पालन के बाद धीरे-धीरे हम कटा हुआ कचरा मछलियों के लिए उन्हें जलवायु के अनुकूल बना सकते हैं। तालाबों या पिंजरों में खिलाने के लिए फीडिंग नेस्ट ट्रे का उपयोग करना लाभदायक है। जिससे हम मछली की जरुरत के हिसाब से फीड समायोजित कर सकेंगे। हम लगातार पिंजरों या तालाब फीडिंग नेस्ट से मछलियाँ ग्रेडिंग कर सकते हैं। ट्रे हमें सक्षम अप्रयुक्त फ़ीड के विघटन को नियंत्रित करने के रूप में तथा पानी की गुणवत्ता प्रबंधन में मदद करता है जो फीड प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमेशा फीडिंग नेस्ट या खिलाने के ट्रे में 2% से 5% अतिरिक्त फीड किया जाना चाहिए, कारण अंडरफीडींग नरभक्षण को जन्म दे सकती है। अगर हमारे पास ग्रेडिंग के लिए विभिन्न तालाब नहीं है, तो हम एक ही तालाब में नेट विभाजन करके ग्रेड अनुसार विभिन्न आकार की मछलियाँ पालन कर सकते हैं। निश्चित रूप से एक तालाब के भीतर विभिन्न आकार की मछलियों के पालन की वजह से मछलियों के अस्तित्व को नुकसान होगा।

दैनिक संवर्धन कार्रवाई के लिए टेबल में दिए ऑक्सीजन और तापमान के विभिन्न मापदंडों को देखें।

पैरामीटर/ Parameters	Ranges/सीमाए
पीएच / ph	7.5 से 8.3
विघटन आक्सीजन/ Dissolve Oxygen	4.0 to 8.0 मिलीग्राम mg/L
तापमान /Temperature	25 to 30 ° सेल्सियस /C
अमोनिया -नाइट्रोजन/ Ammonia- nitrogen	0.02 मिलीग्राम mg/L से कम
हाइड्रोजन सल्फाइड / Hydrogen sulfide	कोई नहीं
लवणता	10 to 31 पीपीटी /ppt

यहाँ दी लवणता सीमाएँ बेहतर वृद्धि स्तर को दिखाती हैं। यहां तक कि यूरीहैलाइन प्रजातियाँ, सी-बास ताजा पानी में भी संवर्धन किया जा सकता हैं। विशेष रूप से महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में कई क्षेत्रों में, वर्षाकालीन (मानसून) फसल के दौरान चावल (धान) की फसल के साथ प्राकृतिक स्रोतों से सी बास स्टॉक संकलित किया जाता है।

रायगढ़ जिले के पेण तालुका के वाशी गॉव एवं कई अन्य गॉवों में हर घर के पास एक तालाब है और इस तालाब में आरजीसीए चेन्नई से बीज लेकर वे सी-बास का संवर्धन करते हैं। सी बास ताजा पानी संवर्धन के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है, शिकारी संस्कृति जहाँ तिलापिया शिकार के रुप में सी-बास के लिए फीडिंग संवर्धन के रुप में इस्तेमाल किया जा सकता है। तिलापिया के ब्रुडरस

तालाब में संवर्धन किए जा सकते हैं जबकि कल्चरड् सी-बास उसी तालाब में जाली के आकार का जहाँ से छोटा तिलापिया रह सकेगा ऐसे पिंजरे में स्टॉक किए जा सकते हैं। इन मछलियों का भारतीय प्रमुख फसल की तुलना में भारत के देशीय बाजार में बेहतर मूल्य है, जो ताज़े पानी के तालाबों में देश भर में पाली गई हो। झींगा खेती के मौजूदा रोग की समस्याओं और इसी तरह की संवर्धन मछलियों की अपेक्षाकृत किसानों को सी-बास संवर्धन से अच्छा लाभ निश्चित रुप से लाभदायी है। सी-बास को लोकप्रिय बनाने एवं बढावा देने की ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण जलकृषियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में उन्नति और राष्ट्रीय मत्स्य उत्पादन बढाने में मदद मिलेगी।

प्रसिद्ध समाधि स्थल

राजघाट	- महात्मा गांधी
शांति वन	- जवाहर लाल नेहरू
विजयघाट	- लाल बहादुर शास्त्री
शक्ति स्थल	- इंदिरा गाँधी
किसान घाट	- चौधरी चरण सिंह
अभय घाट	- मोरारजी देसाई
वीर भूमि	- राजीव गाँधी
समता स्थल	- जगजीवन राम
महाप्रयाण घाट	- डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद
कर्मभूमि	- शंकर दयाल शर्मा
एकता स्थल	- ज्ञानी ज़ैल सिंह
उदय भूमि	- के॰आर॰नारायण

क्या आप जानते हैं ?

1. जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी है।
2. दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रयोग किया जाने वाला पासवर्ड 123456 है।
3. चींटियाँ कभी नहीं सोती।
4. शहद हजारों सालों तक खराब नहीं होता।
5. एक गिलहरी की उम्र 9 साल होती है।
6. हर रोज हमारे 200 बाल झड़ते है।
7. हमारा बायां पाव हमारे दाएँ पाव से बड़ा होता है।
8. एक शुतुरमुर्ग की आँखें उसके दिमाग से बड़ी होती है।
9. फिंगर प्रिंट की तरह मनुष्य की जीभ के निशान भी अलग-अलग होते है।
10. गिलहरी का एक दाँत हमेशा बढ़ता रहता है।

पंच महाभूत की रक्षा

किशोर कुमार वाणिया
कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी
एमपीईडीए-मुख्यालय

आकाश, वायु, जल, अग्नि (ऊर्जा) और पृथ्वी हमारे पंच महाभूत है। इन पंच तत्वों को प्रकृति ने हमें उपहार के रूप में दिया है जो हमारे जीवन के मुख्य आधार स्तम्भ हैं। हमारी संस्कृति में पंच महाभूतों को भगवान का दर्जा मिला है। फिलहाल हम काफी समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसका मूल कारण यही है कि हमने पंच महाभूतों की रक्षा नहीं की है। पंच महाभूतों के असंतुलन से सब कुछ दूषित हो गया है। हम ज़्यादा पैसा कमाने की इस दौड़ में पंच महाभूतों की रक्षा करना भूल गए हैं। इसकी वजह से हमने बहुत सारी समस्याओं को न्यौता दिया है। दूषित पंच महाभूतों की वजह से ग्लोबल वार्मिंग और अनेक बीमारियों ने जन्म दिया है। जल, हवा और खाना इस हद तक प्रभावित हो चुके हैं कि इसका इलाज जल्द से जल्द करना जरूरी हो गया है। आनेवाली नई पीढ़ी को विरासत में यदि कुछ अच्छा देना है तो हमें शुद्ध पंच महाभूत प्रदान करने होंगे। इस मामले में हम पढ़े-लिखे लोगों की ज़िम्मेदारी सबसे ज्यादा है, क्योंकि एक पढ़ा लिखा व्यक्ति प्रकृति की रचना को अधिक निकट से देख तथा समझ सकता है। जैसे कि हमारे शरीर की रचना को जानने के बाद हमें अहसास होता है कि यह अत्यंत अद्भुत रचना है। पंच महाभूतों की रक्षा हम रोजमर्रा के जीवन में छोटी-छोटी

चीजों को ध्यान में रखते हुए भी कर सकते है, जैसे कि – घर में जहरीले रसायनों का उपयोग नहीं करना, अपने शौक को पूरा करने के लिए गाड़ी नहीं चलाना, घर और कार्यालयों में विद्युत का अनावश्यक उपयोग न करना, गंदगी नहीं फैलाना, प्लास्टिक, बैट्री, रसायन, ई-वेस्ट आदि को फेंकने के बदले पुनर्चक्रण करना, ऑर्गनिक खेती को बढ़ावा देना, बिना वजह के दवाइयां या एंटीबॉयटिक का इस्तेमाल नहीं करना आदि। बस इन्ही बातों की वजह से हम पंच महाभूतों की रक्षा करने में सक्षम हो सकेंगे। पंच महाभूतों से यदि हमें अच्छी प्रेरणा मिलती है तो वो निष्काम कर्मयोग है (continuous service without any returns)। पंच महाभूत हमारी सेवा में जीवन पर्यन्त उपलब्ध है और इसकी हमें कभी लागत भी नहीं आती, यानि दाम कभी नहीं चुकाना पड़ेगा। निष्काम कर्मयोग से हमारा जीवन दूसरों के लिए न्योछावर करके हम धन्य हो सकते हैं। आइए, आज यह निर्णय लेते है कि हम न केवल पूर्ण रूप से पंच महाभूतों की रक्षा करेंगे बल्कि समाज को भी प्रेरित करेंगे।

कर्तव्य और प्रेम

बड़ी पुरानी बात है। सूरज ने चाँद को धिक्कारते हुए कहा- "अरे, मूढ़! हमेशा मेरे पीछे ही क्या चलता है! कभी स्वयं भी कुछ कर। पराए प्रकाश को ही सदा ओढ़ने से तुझे लज्जा नहीं आती?" चंद्रमा ने अपनी विनम्र गंभीर दृष्टि से सूरज को ताकते हुए कहा- "इतना प्रमाद न करो, सृष्टि के शासक! मैं जिस दिन तुम्हारे पीछे चलना छोड दूंगा, उस दिन तुम्हारी सत्ता ही समाप्त हो जाएगी। तुम अधूरे हो, मैं तुम्हारी पूर्ति हूँ। तुम कर्तव्य हो, मैं प्रेम हूँ। दोनों की परस्पर-पूर्ति के बिना शासन दूषित रहता है।

कर्तव्य के पावन चरणों से तुम जीवन-पथ पर जो घाव छोड़ते जाते हो, मैं पीछे-पीछे चलकर उन पर चन्दन छिड़कता हूँ।

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते है और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।
- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

जल का महत्व

बूंद बूंद से सागर बनता, बूंद बूंद है जीवन इसका।

हम सब जानते हैं कि जल को जीवन कहा गया हैं, और इस जल के बगैर जीवन का कुछ अर्थ ही नही हैं। इसीलिए जल को संजोए रखना हमारा परम कर्तव्य है अन्यथा हमें भविष्य में पछतावे के सिवाय कुछ भी नहीं मिलेगा। इसका महत्व हमें हमारे पूर्वजों से भी ज्ञात हुआ है, लेकिन हम उनकी बातों को नजर अंदाज करते आए हैं। यह कब तक चलेगा? एक ना एक दिन हम जान जाएंगे कि पानी कितना महत्वपूर्ण है। पानी को बचाना हम मनुष्य के हाथ में हैं। हमें इसके महत्व को पहचान कर इसे किस तरह से कम से कम इस्तमाल करे इसके उपाय ढूंढने होंगे।

जहाँ देखिए वहाँ बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनाकर इन समाज व्यवस्था के ठेकेदारों ने अपनी जेबें पैसों से भरकर अपने आस-पास विभिन्न प्रकार की समस्याएं पैदा कर दी हैं। बड़े-बड़े पेडों को काटकर वहाँ सीमेंट से टॉवरों के जंगल बनाकर मानो हरी-भरी सृष्टि का कत्ल कर दिया है, जिसकी वजह से सालाना बारिश की मात्रा बहुत कम हो रही है। जंगल उजाड़ कर वहाँ वीकेंड होम, सेकंड होम जैसे विकल्प लोगों के सामने लाकर वह लोगों को लुभावने सपने दिखा रहे हैं। परंतु उन्हे यह समझ में नहीं आ रहा हैं कि मानव की सबसे जरुरी चीज पानी है और इसके बगैर वह जिंदा कैसे रहेगा सफाई के लिए हमें प्राकृतिक चीजें जैसे नींबू और सिरके का इस्तेमाल करना चाहिए साथ-साथ फॉस्फेट मुक्त डिटर्जेंट भी पानी की खपत को कम करने में मदत करता है और पर्यावरण के लिए कम हानिकारक है। साफ करने के लिए रासायनिक विकल्पों से परे रहें जिससे पानी का उपयोग भी कम हो सकता है। हमें रसोईघर, स्नानगृह आदि में जरुरत से ज्यादा पानी का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

मृणालिनी परेश आरेकर,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक,
क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई

पानी का सही उपयोग के विकल्प के रूप में वर्षा का पानी इकठ्ठा करके उसे पुन: उपयोग में लाया जा सकता है। जिसे आम भाषा में रेन हार्वेस्टिंग कहा जाता है। आजकल लगभग सभी जगह इस योजना को लोग अपनी सोसायटी में अपना रहे हैं जिससे पानी की किल्लत से बचा जा सकता हैं। गर्मी में जब पानी की कमी होती है, तब हम इसका उपयोग पीने के उपयोग के अतिरिक्त भी कर सकते हैं। भारत में ईसापूर्व तीसरी शताब्दी से लगभग 6000 से अधिक देशों मे वर्षा का पानी और भंडारण, जल संग्रहण संरचनाओं की खोज पुरातत्वविदों का एक लंबा इतिहास रहा है। पानी बचाव के अभियान के लिए कुछ संघठन आगे आए और उन्होंने 1992 मे पीएसएस के सामाजिक स्वैच्छिक संगठन शुरु कर दिया। 2006 में आंध्र प्रदेश के एक गाँव में जीवन तेलगु गंगा परियोजना के द्वारा एक पर्यावरण अनुकूल मॉडेल तैयार किया गया। जल हमारे अस्तित्व और सरंक्षण की बुनियादी जरुरत है, और हमें अपनी जिम्मेदारी को बहुत खूब निभाना आता है। इसी लिए हम में से प्रत्येक का यह कर्तव्य है कि जल बचाओ और सृष्टि की रक्षा करो।

राजभाषा गतिविधियाँ

अखिल एमपीईडीए राजभाषा सम्मेलन की एक झलक
आयोजित दिनांक: 09.07.2015 10.07.2015

ईश वंदना - कुमारी सरिता

दीप प्रज्जवलन -
श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्या.)

श्री बी॰श्रीकुमार, सचिव महोदय जी का सम्बोधन

एमपीईडीए - मुख्यालय के सम्मेलन कक्ष में भाग लेते हुए प्रतिभागी तथा प्रमाण -पत्र वितरण

श्री बी॰श्रीकुमार, सचिव (बाएं) -
श्री बाबूलाल इका कोली, तकनीकी सहायक,
क्षे.का., वेरावल (दाएं)

श्री के॰जे॰एंटोनी, संयुक्त निदेशक (बाएं) -
श्रीमती प्रीता प्रदीप, क. तकनीकी अधिकारी
(नि.सं.), उ.क्षे.का. कोल्लम (दाएं)

श्रीमती आशा सी॰ परमेश्वरन, संयुक्त निदेशक
(जलकृषि) (बाएं) - श्री ईश्वरय्या, क. अधीक्षक,
क्षे.का. विशाखपट्टनम (दाएं)

एक अच्छी पुस्तक हज़ार दोस्तों के समान होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक पुस्तकालय के समान होता है। - डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी एवं हिन्दी कार्यशालाओं की झलक

दीप प्रज्जवलन - श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) तथा श्री बी॰श्रीकुमार, सचिव

श्री बी. श्रीकुमार, सचिव महोदय जी का सम्बोधन

श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा॰भा॰) का सम्बोधन

तकनीकी संगोष्ठी में भाग लेते हुए प्रतिभागी

तकनीकी संगोष्ठी / कार्याशाला में भाग लेते हुए प्रतिभागी

कार्यशाला में भाग लेते हुए प्रतिभागी

कार्यशाला की संकाय - श्रीमती टी॰पी॰लीना, एफएसआई

कोच्ची में स्थित स्कूल / मुख्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं की एक झलक

केवल प्रसन्नता ही एकमात्र इत्र है, जिसे आप दूसरों पर छिड़के तो उसकी कुछ बूंदे अवश्य ही आप पर भी पड़ती हैं। - महात्मा गांधी

हिन्दी पखवाड़ा - 2014 पुरस्कार वितरण समारोह की एक झलक

माननीय निदेशक (वि) महोदय
श्री एन॰ रमेश

माननीय सचिव महोदय
श्री बी॰ श्रीकुमार

राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी - प्रथम पुरस्कार : राजगिरी पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी - मास्टर जोयल राजू

राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी - द्वितीय पुरस्कार : भवन्स आदर्श विद्यालय, काक्कनाड़ - कुमारी मीनाक्षी बी॰मोनोन

ललितगान (उप-कनिष्ठ) प्रतियोगिता - कुमारी महल, सुपुत्री श्रीमती नीतु हुसैन, कनिष्ठ आशुलिपिक

सुलेख प्रतियोगिता - श्रीमती फिलोमिना विनीता, कनिष्ठ लिपिक

हिन्दी वार्तालाप प्रतियोगिता - श्री वाणिया किशोर, तकनीकी अधिकारी (लैब) एवं कुमारी सरिता, कनिष्ठ लिपिक

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता - श्री यू॰सी॰ महापात्र, सहायक निदेशक (अक्वा)

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - डॉ श्री जिबीन कुमार, उप निदेशक (प्रचार) एवं श्री आलफ्रेड, वरिष्ठ लिपिक

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - श्री दर्शनलाल ढौंडियाल, अनुभाग अधिकारी (कार्मिक) एवं श्री रेजी मैथ्यू, सहायक निदेशक (आई.ओ.ए.पी)

पुरस्कार वितरण के दौरान उपस्थित कार्मिक

धन्यवाद ज्ञापन - श्री सुनील कुमार ०यू, सहायक निदेशक (सतर्कता)

अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के सामान है जो धरातल की सतह को चमकदार और साफ़ कर देती है। - महात्मा गांधी

अखिल एमपीईडीए राजभाषा सम्मेलन: 2015 - एक रिपोर्ट

दिनांक 09.07.2015 तथा 10.07.2015 को एमपीईडीए के इतिहास में पहली बार 2 दिनों के **"अखिल एमपीईडीए राजभाषा सम्मेलन"** का आयोजन मुख्यालय में किया गया। सम्मेलन का संचालन श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (राजभाषा), एमपीईडीए द्वारा किया गया। इस सम्मेलन में एमपीईडीए - मुख्यालय के सभी अनुभागों, सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, उप क्षेत्रीय कार्यालयों, क्षेत्रीय केंद्रों तथा उप क्षेत्रीय केंद्रों से एक-एक अधिकारी/कर्मचारी ने भाग लिया जो अपने कार्यालय में राजभाषा के कार्य-कलापों के लिए नामित तथा उत्तरदायी है। इस सम्मेलन के संकाय के रूप में श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

सम्मेलन के दौरान चर्चित विषय निम्नानुसार थे :

1. राजभाषा के कार्यांवयन और राजभाषा नियमों पर जानकारी प्रदान करना।
2. एमपीईडीए के सभी कार्यालयों से मुख्यालय में हर तिमाही प्रेषित होने वाली तिमाही प्रगति रिपोर्टों को तैयार करना और प्रेषित करना।
3. राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के पालन हेतु अनेक बिंदुओं पर चर्चा।
4. एमपीईडीए के सभी कार्यालयों से अबतक प्रेषित हुई तिमाही प्रगती रिपोर्टों की कमियों तथा उपलब्धियों के बारे में चर्चा।
5. कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए सभी कर्मचारियों को यूनिकोड के सक्रियकरण की विधि बताना और कर्मचारियों द्वारा उसका अभ्यास।
6. एमपीईडीए – मुख्यालय के प्रत्येक अनुभागों से भी तिमाही प्रगति रिपोर्ट हर तिमाही में हिन्दी अनुभाग को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित किया जाना।

एमपीईडीए - मुख्यालय में आयोजित राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी

दिनांक 07 मार्च, 2015 को एमपीईडीए, मुख्यालय में वर्ष 2014-15 की चतुर्थ तिमाही हेतु **"राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी"** का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की संकाय के रूप में श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) उपस्थित थीं। उन्होंने 'राजभाषा नियम' की जानकारी दी और "हिन्दी तकनीकी शब्दों" पर राजभाषा संगोष्ठी में ज्ञानवर्धन कराया।

दिनांक 16 मई, 2015 को वित्त वर्ष 2015-16 की प्रथम तिमाही हेतु एमपीईडीए, मुख्यालय में राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में संकाय के रूप में भारतीय मत्स्य सर्वेक्षण की श्रीमती लीना टी०पी० उपस्थित थी। इस संगोष्ठी में "राजभाषा नीति और उसके कार्यान्वयन" के बारे में बताया गया। संगोष्ठियों का संचालन श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (राजभाषा), एमपीईडीए द्वारा किया गया।

एमपीईडीए के मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला

एमपीईडीए के मुख्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में प्रतिवर्ष चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। मुख्यालय में वर्ष 2014-15 की चतुर्थ तिमाही की हिन्दी कार्यशाला दिनांक 11.03.2015 को आयोजित की गई जिसमें मुख्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अलावा उप क्षेत्रीय कार्यालय - कोल्लम, क्षेत्रीय केंद्र - कोच्ची, क्षेत्रीय कार्यालय - कोच्ची के कर्मचारियों ने भी भाग लिया। प्राधिकरण के दैनिक कार्यालयीन काम में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सरल बनाने के उद्देश्य से कार्यशाला में "टिप्पण एवं आलेखन" और "यूनिकोड" के बारे में पढ़ाया गया। वर्ष 2015-16 की पहली हिन्दी कार्यशाला दिनांक 16.05.2015 को आयोजित की गई। कार्यशाला का संचालन श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (राजभाषा), एमपीईडीए द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में कुल 25+ अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी पखवाडा समारोह – 2014

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। श्री पी.मोहनसुन्दरम, तत्कालीन निदेशक ने पारंपरिक दीप प्रज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में निदेशक महोदय ने हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए और आयोजित की जानेवाली हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आह्वान किया।

सचिव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एमपीईडीए के सभी कार्यकलापों की सराहना की और भविष्य में भी इसे जारी रखने की सलाह दी। श्रीमती मल्लिका उण्णिकृष्णन, हिंदी अधिकारी ने पिछले वर्ष के राजभाषा कार्यकलापों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री जी.राजेन्द्रन, उप निदेशक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। श्रीमती संगीता.जी ने इस समारोह का संचालन किया। हिन्दी पखवाड़े के सिलसिले में प्राधिकरण के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

हिन्दी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची निम्नलिखित है :

अनुवाद

1.श्रीमती नीनू पीटर, सहायक निदेशक - प्रथम
2.कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3.श्री यू.सी.महापात्र, सहायक निदेशक - तृतीय

सुलेख

1. श्रीमती दीपा.के.आर, कनिष्ठ आशुलिपिक - प्रथम
2. श्रीमती गंगा.के.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक - द्वितीय
3. श्रीमती फिलोमिना विनीता, कनिष्ठ लिपिक - तृतीय

सारलेखन

1. श्री जी.राजेन्द्रन, उप निदेशक - प्रथम
2. श्रीमती के.आर.मंगला, सहायक - द्वितीय
3. श्रीमती शिबी मोहनन, कनिष्ठ लिपिक - तृतीय

निबंध लेखन

1. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. कुमारी आशिता खलील, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्री डी.आर.उण्णित्तान, वरिष्ठ लिपिक - तृतीय

स्मरण शक्ति

1. श्रीमती दीप्ती क्लीटस, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. कुमारी शाहिदा, रिसर्च एसोसिएट - तृतीय

टिप्पण एवं आलेखन

1. श्री वाणिया किशोर कुमार, तकनीकी अधिकारी - प्रथम
2. श्रीमती रिबेका जोस, सहायक निदेशक - द्वितीय
3. श्री यू.सी.महापात्र, सहायक निदेशक - तृतीय

हिन्दी वार्तालाप

1. श्री दर्शनलाल ढौंडियाल, अनुभाग अधिकारी ***एवं*** श्री यू.सी.महापात्र, सहायक निदेशक - प्रथम
2. श्रीमती नीनु पीटर, सहायक निदेशक ***एवं*** श्री राजकुमार नायक, उप निदेशक - द्वितीय
3. श्री वाणिया किशोर कुमार, तकनीकी अधिकारी ***एवं*** कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - तृतीय

हिन्दी भाषण

1. श्री दर्शनलाल ढौंडियाल, अनुभाग अधिकारी - प्रथम
2. श्री राजकुमार नायक, उप निदशक - द्वितीय
3. श्री एस विजयकुमार, सहायक निदेशक - तृतीय

हिन्दी समाचार वाचन

1. श्री वाणिया किशोर कुमार, तकनीकी अधिकारी - प्रथम
2. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्रीमती एस.रमादेवी, वरिष्ठ लिपिक - तृतीय

हिन्दी ललित गान (पुरुष)

1. श्री निशान्त, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्री वी.के.सुरेश, वरिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्री ए.जी.एल्फ्रेड, वरिष्ठ आशुलिपिक - तृतीय

हिन्दी ललित गान (महिला)

1. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्रीमती सबिता, रिसर्च एसोसिएट - द्वितीय
3. कुमारी शाहिदा, रिसर्च एसोसिएट - तृतीय

कविता पाठ

1. श्री दर्शनलाल ढौंडियाल, अनुभाग अधिकारी - प्रथम
2. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्री वाणिया किशोर कुमार, तक. अधि. - तृतीय

हिन्दी टंकण

1. कुमारी एम.एम.सरिता, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्रीमती दिव्या मोहनन, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्रीमती एलिज़बत फास्मिता टिन्टू, क. आशु. - तृतीय

हिन्दी अन्ताक्षरी

1. श्री निशान्त एवं श्रीमती के.आर मंगला - प्रथम
2. कुमारी शाहिदा एवं श्रीमती सबिता - द्वितीय
3. डॉ जिबिन कुमार एवं श्री ए.जी.एल्फ्रेड - तृतीय

हिन्दी प्रश्नोत्तरी

1. श्रीमती नीनू पीटर एवं श्री यू.सी.महापात्र - प्रथम
2. डॉ जिबिन कुमार एवं श्री ए.जी.एल्फ्रेड - द्वितीय
3. श्री रेजी माथ्यू एवं श्री दर्शनलाल ढौंडियाल - तृतीय

एमपीईडीए द्वारा कोच्ची में स्थित स्कूलों के छात्रों के लिए आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं की एक संक्षिप्त रिपोर्ट

प्राधिकरण में हिन्दी पखवाडा समारोह-2014 के सिलसिले में कोच्ची के आसपास के स्कूलों के छात्रों के लिए 27 सितंबर, 2014 पूर्वाह्न 10.00 बजे को एमपीईडीए के सम्मेलन कक्ष में हिन्दी ललितगान, हिन्दी कविता पाठ और हिन्दी भाषण आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। श्रीमती मल्लिका उण्णिकृष्णन, हिन्दी अधिकारी ने सभा में उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया। डॉ.हेरमन.पी.जे, एसोसिएट प्रोफेसर, कालीकट विश्वविद्यालय एवं श्री कृष्णकुमार.एम.जी, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी, मुख्य लेखा-परीक्षा निदेशक का कार्यालय, कोच्ची-17 निर्णायक रहे। अपराह्न 1.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ। हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं का विवरण निम्नलिखित है :

ललितगान

1. कुमारी सेबा टोमी, राजगिरि पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी - प्रथम
2. मास्टर अरविन्द डी नायर, भवन्स विद्या मंदिर, गिरिनगर - द्वितीय
3. मास्टर जोयल रेजु, राजगिरि पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी - तृतीय

कविता पाठ

1. कुमारी मालविका सुनिल, राजगिरि पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी - प्रथम
2. कुमारी तज़ीन मोमीन, केन्द्रीय विद्यालय, एरणाकुलम - द्वितीय
3. कुमारी वर्षा एस नंबियार, भवन्स विद्या मंदिर, गिरिनगर - तृतीय

हिन्दी भाषण

1. कुमारी मीनाक्षी बी.मोनोन, भवन्स आदर्श विद्यालय, काक्कनाड - प्रथम
2. कुमारी श्रेया आनी जोसफ, राजगिरि पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी - द्वितीय
3. कुमारी वर्षा जोषी, क्रिस्तु जयंती पब्लिक स्कूल, काक्कनाड - तृतीय

इस वर्ष राजगिरि पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी (प्रथम) तथा भवन्स आदर्श विद्यालय, काक्कनाड एवं भवन्स विद्या मंदिर, गिरिनगर राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी (द्वितीय) के हकदार बने।

एमपीईडीए के अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताएं

एमपीईडीए में हिन्दी पखवाडा समारोह-2014 के सिलसिले में दिनांक 21 सितंबर 2014 को एमपीईडीए के अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी श्रुतलेखन, ललितगान, हिन्दी वाचन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पूर्वाह्न 10.00 बजे एमपीईडीए के सम्मेलन कक्ष में यह कार्यक्रम शुरू हुआ। श्रीमती मल्लिका उण्णिकृष्णन, हिंदी अधिकारी ने प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी बच्चों का स्वागत किया। श्रीमती उमा.ई.के., सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी), सीएमएफआरआई, कोच्ची एवं श्रीमती रश्मी.आर.आई, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, काजू एवं कोको निदेशालय, कोच्ची निर्णायक के रूप में उपस्थित थीं। अपराह्न 12.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ। हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं का विवरण निम्नलिखित है :

हिंदी श्रुतलेखन (कनिष्ठ)

1.	मास्टर प्रणव.पी, सुपुत्र श्रीमती गंगा.के.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	प्रथम
2.	कुमारी चांदनी एस.नाइक, सुपुत्री श्रीमती ई.वी.दीपा, मुख्य लेखा अधिकारी	-	द्वितीय
3.	कुमारी टी आर कृष्णा, सुपुत्री श्री टी वी रवीन्द्रन, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय
4.	मास्टर संजय.वी एस, सुपुत्र श्रीमती संगीता.जी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	-	चतुर्थ

ललितगान (कनिष्ठ)

1.	कुमारी चांदनी एस.नाइक, सुपुत्री श्रीमती ई.वी.दीपा, मुख्य लेखा अधिकारी	-	प्रथम
2.	कुमारी टी आर कृष्णा, सुपुत्री श्री टी वी रवीन्द्रन, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	प्रथम
3.	मास्टर संजय.वी एस, सुपुत्र श्रीमती संगीता.जी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	-	द्वितीय
4.	मास्टर प्रणव.पी, सुपुत्र श्रीमती गंगा.के.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय

हिन्दी वाचन (कनिष्ठ)

1.	कुमारी चांदनी एस.नाइक, सुपुत्री श्रीमती ई.वी.दीपा, मुख्य लेखा अधिकारी	-	प्रथम
2.	कुमारी टी आर कृष्णा, सुपुत्री श्री टी वी रवीन्द्रन, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	द्वितीय
3.	मास्टर प्रणव.पी, सुपुत्र श्रीमती गंगा.के.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय
4.	मास्टर संजय.वी एस, सुपुत्र श्रीमती संगीता.जी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	-	चतुर्थ

ललितगान (उप कनिष्ठ)

1.	कुमारी मिता, सुपुत्री श्री बिजिमोन, फील्ड पर्यवेक्षक	-	प्रथम
2.	कुमारी नीला के.अनीष, सुपुत्री श्रीमती शिबी मोहनन, कनिष्ठ लिपिक	-	द्वितीय
3.	कुमारी लिपी, सुपुत्री श्री किशोर कुमार वानिया, तकनीकी अधिकारी	-	द्वितीय
4.	कुमारी महल, सुपुत्री श्रीमती नीतू हुसैन, कनिष्ठ आशुलिपिक	-	द्वितीय
5.	मास्टर रक्षित. सुपुत्र श्री किशोर कुमार वानिया, तकनीकी अधिकारी	-	तृतीय

मलेरिया से जूझने के लिए उड़ीसा में गंबूसिया मत्स्य कृषि का प्रारम्भ

मलेरिया वाहक मच्छरों से जूझने के लिए ज़िला मुख्यालय अस्पताल (DHH) के ओडिशा संबलपुर ज़िला प्राधिकारियों ने अपने परिसर में, गंबूसिया मत्स्य या मच्छर मत्स्य की खेती को पुनर्जीवित किया है। स्वास्थ्य विभाग, ज़िले भर में मच्छर प्रजनन जल स्रोतों में, मच्छर लार्वे को खाने के लिए गंबूसिया मत्स्य छोड़ने की योजना बना रहा है।

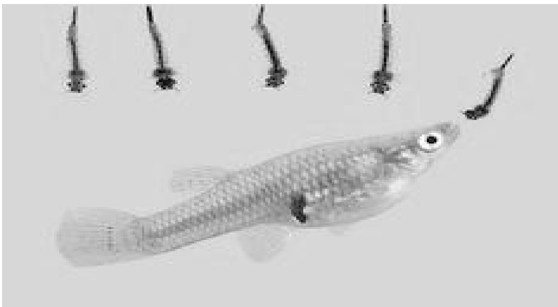

डी एच एच कैंपस में एक ठोस पानी की टंकी का मत्स्य कृषि के लिए इस्तेमाल किया गया था, जिसका हाल ही में $ 469 (30,000 की लागत से पुनःनिर्माण किया गया है। ज़िला मलेरिया अधिकारी ने कहा कि 20 फुट लंबी,10 फुट चौडी और 10 फुट गहरी टंकी, ज़िले में एक मदर हैचरी के रूप में काम करेगी।

प्रस्ताव यह भी है कि गंबूसिया और मत्स्य की गप्पी किस्मों को यहाँ अभिजनित किया जाएगा तथा उप-प्रभागीय अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की छोटी हैचरियों को वितरित किया जाएगा। गंबूसिया और गप्पी के करीब 1,500 मत्स्य पौनों को टंकी में छोड़ा गया है। दोनों प्रजातियाँ मच्छरों के लार्वे खाते हैं। एक दिन में जहां एक गंबूसिया मत्स्य 100 से 300 तक लार्वे खाता है, वहीं एक गप्पी मत्स्य 80 से 100 तक लार्वे खाता है। अनुसंधानकर्ता के अनुसार - "यह, लार्वा के प्यूपा और वयस्क मच्छर में परिवर्तित होने से पहले, प्रारम्भ में ही मलेरिया को खत्म करने की तरह है।" गंबूसिया मत्स्य को ग्रामीण क्षेत्रों के जल निकायों और स्थिर जल स्रोतों में छोड़ा जाएगा जबकि गप्पी मत्स्य को शहरी क्षेत्रों की नालियों में छोड़ा जाएगा। "यह,नगण्य लागत पर दोनों मत्स्य प्रजातियों के केंद्रीकृत स्टॉक को बनाए रखने के लिए आसान पाया गया है"। अनुसंधानकर्ता के अनुसार- "गंबूसिया और गप्पी मत्स्य सभी प्रकार के पानी में जीवित रहते हैं तथा परिपक्वता के बाद साल में, हर चार सप्ताह के अंतराल में प्रजनन करते है।

सौजन्य से:
तुलसी नायर
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

महत्वपूर्ण पहलू यह है कि, इसे लाने ले जाने के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है और आशा की जाती है कि वातावरण को प्रभावित किए बिना काम हो जाएगा। सूत्रों के मुताबिक, वर्ष 2012 में, ज़िले में मलेरिया की जांच पर, 9,209 रोगी सकारात्मक पाए गए जबकि वर्ष 2013 में दो मृत्यु के अलावा इनकी संख्या 9,556 रहीं।

इसी प्रकार, वर्ष 2014 में 18,812 रोगी मलेरिया के लिए सकारात्मक पाए गए जिनमें से एक की मृत्यु हो गयी , जबकि इस वर्ष मार्च 2015 तक रोगियों की संख्या 2,697 थी। पहली बार मत्स्य, जिसका उपयोग वर्ष 1928 से भारत में किया जा रहा है, मच्छरों के कारण होने वाली बीमारी के प्रादुर्भाव को रोकने के लिए, जिले के सभी 47 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में वितरण किया जाएगा। बीमारी, विशेष रूप से डेंगू में कटौती करने के उद्देश्य से मत्स्य को लिया गया है। गंबूसिया मत्स्य, तापमान और साथ ही साथ पानी की रसायनिक और जैविक सामग्री के भारी बदलाव के अनुकूल हो सकता हैं, लेकिन अधिक उच्च कार्बनिक प्रदूषण सहन नहीं कर सकता हैं। प्रजनन के लिए अधिकतम तापमान 24C से 34C के बीच है लेकिन मत्स्य अत्यधिक ठंडे तापमान में भी जीवित रह सकते हैं।

मच्छर लार्वा के लिए मत्स्य फ्रीक्वेंट क्षेत्र विशेष रूप से उपयुक्त होता हैं। यह बड़े मत्स्य से भरे तालाब में रहता और दुगुना होता है, बशर्ते कि, तालाब उथला और उसमें आश्रय के लिए सुरक्षात्मक वनस्पति हो। एक पूर्ण विकसित मत्स्य प्रति दिन 100 से 300 मच्छर लार्वा खाता है। एक वयस्क गंबूसिया (एफिनिस एफिनिस) लंबाई में केवल 2½ इंच होता है। यह प्रशीतन बिन्दु से लेकर 90°F

बारिश के दौरान सारे पंछी आश्रय की तलाश करते हैं लेकिन बाज़ बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से बच निकलता है। समस्याएं टलती नहीं है, लेकिन आपकी विचार-धारा इनमे फर्क पैदा करती है। - डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

से ऊपर के तापमान को सहन कर सकता है और सभी प्रकार के पानी में जीवित रह सकता है। प्रजातियाँ अधिक भीड़भाड़ में भी सफलतापूर्वक जीवित रह सकते हैं। 2 इंच आकार का होने पर यह प्रजनन शुरू कर देता है। एक मछली प्रत्येक दिन अपने वज़न के बराबर मच्छर लार्वे का उपभोग कर सकता है और इसलिए यह "मच्छर मत्स्य" के नाम से भी जाना जाता है।

एक वयस्क मादा गंबूसिया (एफिनिस होल्ब्रूकी) लंबाई में लगभग 3 इंच की होती है जबकी नर छोटे होते हैं। यह प्रशीतन बिन्दु से लेकर 88° F से ऊपर के तापमान को सहन कर सकती है। अत्यधिक ठंडी स्थिति में यह कीचड़ में सीतनिद्रा (निष्क्रिय) हो जाती हैं। यह प्रजाति, भारत तथा बर्मा, थाईलैंड, फोर्मोसा, फिलीपींस, जापान और हवाई जैसे दुनिया के अन्य भागों में एक प्रभावी मच्छर विनाशक साबित हुई है।

24 फ़रवरी 2014 को, चेन्नई निगम ने मीठे पानी में मच्छरों की संख्या नियंत्रित करने के लिए 660 तालाबों में पश्चिमी मच्छर मत्स्य डाले। गंबूसिया मत्स्य के अलावा, लार्वीसीडल मत्स्य का उपयोग भी सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। मच्छरों के जैविक नियंत्रण के लिए लार्वीसीडल मत्स्य एक महत्वपूर्ण साधन है।

मत्स्य रोगवाहक होते हैं, जो जलाशय जीवों से मनुष्य में कई रोगों का संचारण करते हैं। महत्वपूर्ण और गंभीर मलेरिया, फ़िलेरिया, डेंगू, पीला बुखार, जापानी बी इन्सेफेलाइटिस तथा अन्य महत्वपूर्ण और गंभीर रोग मच्छरों के माध्यम से संचारित किया जा रहा हैं। मच्छर लार्वे के उपभोग द्वारा लार्वीसीडल मत्स्य, रोगवाहकों की आबादी को कम करने में सहायता देते हैं और इसके द्वारा मच्छर जनित रोगों के उद्भव को कम करते हैं।

साइक्लोप्स, जो कि कृमि के लिए एक मध्यवर्ती परपोषी है , की संख्या में कटौती करने के लिए, अंबासिस जैसे साइक्लोप्सीवोरस मत्स्य को डालकर गिनी कृमि को भी नियंत्रित किया जा सकता है। गास्ट्रोपोड्स और लामेल्लीब्रांक्स, जो परजीवी, विशेषकर मानव खाद्य मूल्य के जानवरों के लिए, वाहक के रूप में कार्य करते हैं, को भी सीधे नियंत्रित किया जा सकता है क्योंकि लार्वीसीडल मत्स्य, उनके लार्वों और छोटे रूप को चारे के रूप में ग्रहण करते हैं।

मच्छर नियंत्रण में मत्स्य का उपयोग 100 से भी अधिक वर्षों से विख्यात है। भारत में, बहुत पहले 1904 में, मलेरिया रोगवाहक के नियंत्रण के लिए मुंबई शहर में लार्वा खाने वाले मत्स्यों का इस्तेमाल किया गया था।

अहंकार

मोमबत्ती और अगरबत्ती दो बहने थीं। दोनों एक मन्दिर में रहती थीं। बडी बहन मोमबत्ती हर बात में अपने को गुणवान और अपने फैलते प्रकाश के प्रभाव में सदा अपने को ज्ञानवान समझकर छोटी बहन को नीचा दिखाने का प्रयास करती थीं। अगरबत्ती सदा मुस्कुराती रहती थी। उस दिन भी हमेशा की तरह पुजारी आया, दोनो को जलाया और किसी कार्य वश मन्दिर से बाहर चला गया। तभी हवा का एक तेज़ झोका आया और मोमबत्ती बुझ गई। यह देख अगरबत्ती ने नम्रता से अपना मुख खोला-'बहन, हवा के एक हलके झोके ने तुम्हारे प्रकाश को समेट दिया....परंतु इस हवा के झोके ने मेरी सुगन्ध को और भी चारों तरफ बिखेर दिया।'यह सुनकर मोमबत्ती को अपने अहंकार पर शार्मिन्दगी हुई। अहंकार इन्सान को तबाह और बर्बाद कर देता है। इसलिए विनम्र बनो विनम्रता इन्सान की तरक्की का रास्ता है।

मुंशी प्रेमचंद - एक परिचय

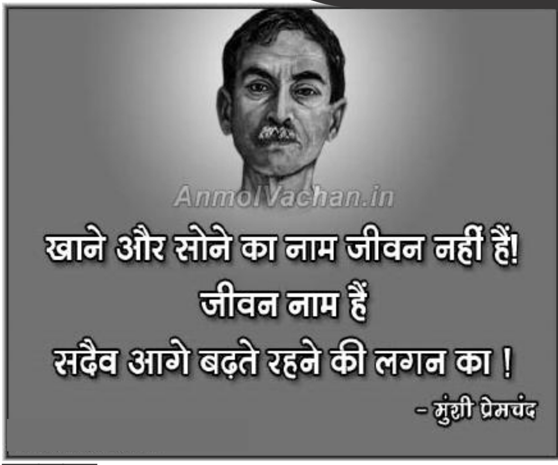

जन्म

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस शहर से चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम अजायब राय था। वह डाकखाने में मामूली नौकर के तौर पर काम करते थे ।

जीवन

धनपतराय की उम्र जब केवल आठ साल की थी तो माता के स्वर्गवास हो जाने के बाद से अपने जीवन के अन्त तक लगातार विषम परिस्थितियों का सामना धनपतराय को करना पड़ा। पिताजी ने दूसरी शादी कर ली जिसके कारण बालक प्रेम व स्नेह को चाहते हुए भी ना पा सका। आपका जीवन गरीबी में ही पला। कहा जाता है कि आपके घर में भयंकर गरीबी थी। पहनने के लिए कपड़े न होते थे और न ही खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिलता था। इन सबके अलावा घर में सौतेली माँ का व्यवहार भी हालत को खस्ता करने वाला था।

शादी

आपके पिता ने केवल 15 साल की आयू में आपका विवाह करा दिया। पत्नी उम्र में आपसे बड़ी और बदसूरत थी। पत्नी की सूरत और उसके जबान ने आपके जले पर नमक का काम किया। आप स्वयं लिखते हैं, "उम्र में वह मुझसे ज्यादा थी। जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मेरा खून सूख गया..। "उसके साथ-साथ जबान की भी मीठी न थी । आपने अपनी शादी के फैसले पर पिता के बारे में

लिखा है "पिताजी ने जीवन के अन्तिम सालों में एक ठोकर खाई और स्वयं तो गिरे ही, साथ में मुझे भी डुबो दिया: मेरी शादी बिना सोंचे समझे कर डाली।" हालांकि आपके पिताजी को भी बाद में इसका अहसास हुआ और काफी अफसोस किया।

विवाह के एक साल बाद ही पिताजी का देहान्त हो गया। अचानक आपके सिर पर पूरे घर का बोझ आ गया। एक साथ एक साथ पाँच लोगों का खर्चा सहन करना पड़ा। पाँच लोगों में विमाता, उसके दो बच्चे पत्नी और स्वयं। प्रेमचन्द की आर्थिक विपत्तियों का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि पैसे के अभाव में उन्हें अपना कोट बेचना पड़ा और पुस्तकें बेचनी पड़ी। एक दिन ऐसी हालत हो गई कि वे अपनी सारी पुस्तकों को लेकर एक बुकसेलर के पास पहुंच गए। वहाँ एक हेडमास्टर मिले जिन्होंने आपको अपने स्कूल में अध्यापक पद पर नियुक्त किया।

शिक्षा

अपनी गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचन्द ने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में आप अपने गाँव से दूर बनारस पढ़ने के लिए नंगे पाँव जाया करते थे। इसी बीच पिता का देहान्त हो गया। पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वकील बनना चाहते थे। मगर गरीबी ने तोड़ दिया।

स्कूल आने - जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहाँ ट्यूशन पकड़ लिया और उसी के घर एक कमरा लेकर रहने लगे। ट्यूशन का पाँच रुपया मिलता था। पाँच रुपये में से तीन रुपये घर वालों को और दो रुपये से अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। इस दो रुपये से क्या होता? महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में मैट्रिक पास किया।

साहित्यिक रुचि

गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी प्रेमचन्द के साहित्य की ओर उनके झुकाव को रोक न सकी। प्रेमचन्द जब मिडिल में थे तभी से आपने उपन्यास पढ़ना आरंभ कर दिया था। आपको बचपन से ही उर्दू आती थी। आप पर नॉवल और उर्दू उपन्यास का ऐसा उन्माद छाया कि आप बुकसेलर की दुकान पर बैठकर ही सब नॉवल पढ़ गए। आपने दो - तीन साल के अन्दर ही सैकड़ों नॉवेलों को पढ़ डाला।

आपने बचपन में ही उर्दू के समकालीन उपन्यासकार सरुर मोलमा शार, रतन नाथ सरशार आदि के दीवाने हो गये कि जहाँ भी इनकी किताब मिलती उसे पढ़ने का हर संभव प्रयास करते थे। आपकी रुचि इस बात से साफ झलकती है कि एक किताब को पढ़ने के लिए आपने एक तम्बाकू वाले से दोस्ती करली और उसकी दुकान पर मौजूद "तिलस्मे - होशरुबा" पढ़ डाली।

अंग्रेजी के अपने जमाने के मशहूर उपन्यासकार रोनाल्ड की किताबों के उर्दू तरजुमो को आपने काफी कम उम्र में ही पढ़ लिया था। इतनी बड़ी - बड़ी किताबों और उपन्यासकारों को पढ़ने के बावजूद प्रेमचन्द ने अपने मार्ग को अपने व्यक्तिगत विषम जीवन अनुभव तक ही महदूद रखा। तेरह वर्ष की उम्र में से ही प्रेमचन्द ने लिखना आरंभ कर दिया था। शुरु में आपने कुछ नाटक लिखे फिर बाद में उर्दू में उपन्यास लिखना आरंभ किया। इस तरह आपका साहित्यिक सफर शुरु हुआ जो मरते दम तक साथ-साथ रहा।

व्यक्तित्व

सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचन्द सदा मस्त रहते थे। उनके जीवन में विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। इस खेल को उन्होंने बाजी मान लिया जिसको हमेशा जीतना चाहते थे। अपने जीवन की परेशानियों को लेकर उन्होंने एक बार मुंशी दयानारायण निगम को एक पत्र में लिखा "हमारा काम तो केवल खेलना है- खूब दिल लगाकर खेलना- खूब जी- तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना मानों हम दोनों लोकों की संपत्ति खो बैठेंगे। किन्तु हारने के पश्चात् - पटखनी खाने के बाद, धूल झाड़ खड़े हो जाना चाहिए और फिर ताल ठोंक कर विरोधी से कहना चाहिए कि एक बार फिर जैसा कि सूरदास कह गए हैं, "तुम जीते हम हारे। पर फिर लड़ेंगे।" कहा जाता है कि प्रेमचन्द हंसोड़ प्रकृति के मालिक थे। विषमताओं भरे जीवन में हंसोड़ होना एक बहादुर का काम है। इससे इस बात को भी समझा जा सकता है कि वह अपूर्व जीवनी-शक्ति का द्योतक थे। सरलता, सौजन्यता और उदारता के वह मूर्ति थे।

जहां उनके हृदय में मित्रों के लिए उदार भाव था वहीं उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था। जैसा कि उनकी पत्नी कहती हैं "कि जाड़े के दिनों में चालीस - चालीस रुपये दो बार दिए गए दोनों बार उन्होंने वह रुपये प्रेस के मजदूरों को दे दिये। मेरे नाराज होने पर उन्होंने कहा कि यह कहां का इंसाफ है कि हमारे प्रेस में काम करने वाले मजदूर भूखे हों और हम गरम सूट पहनें।"

प्रेमचन्द उच्चकोटि के मानव थे। आपको गाँव जीवन से अच्छा प्रेम था। वह सदा साधारण गंवई लिबास में रहते थे। जीवन का अधिकांश भाग उन्होंने गाँव में ही गुजारा। बाहर से बिल्कुल साधारण दिखने वाले प्रेमचन्द अन्दर से जीवनी-शक्ति के मालिक थे। अन्दर से जरा सा भीकिसी ने देखा तो उसे प्रभावित होना ही था। वह आडम्बर एवं दिखावा से मीलों दूर रहते थे। जीवन में न तो उनको विलास मिला और न ही उनको इसकी तमन्ना थी। तमाम महापुरुषों की तरह अपना काम स्वयं करना पसंद करते थे।

ईश्वर के प्रति आस्था

जीवन के प्रति उनकी अगाढ़ आस्था थी लेकिन जीवन की विषमताओं के कारण वह कभी भी ईश्वर के बारे में आस्थावादी नहीं बन सके। धीरे - धीरे वे अनीश्वरवादी से बन गए थे। एक बार उन्होंने जैनेन्दजी को लिखा "तुम आस्तिकता की ओर बढ़े जा रहे हो - जा रहीं रहे पक्के भग्त बनते जा रहे हो। मैं संदेह से पक्का नास्तिक बनता जा रहा हूँ।"

मृत्यू के कुछ घंटे पहले भी उन्होंने जैनेन्द्रजी से कहा था - "जैनेन्द्र, लोग ऐसे समय में ईश्वर को याद करते हैं मुझे भी याद दिलाई जाती है। पर मुझे अभी तक ईश्वर को कष्ट देने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई।"

प्रेमचन्द की कृतियाँ

प्रेमचन्द ने अपने नाते के मामू के एक विशेष प्रसंग को लेकर अपनी सबसे पहली रचना लिखी। 13 साल की आयु में इस रचना के पूरा होते ही प्रेमचन्द साकहत्यकार की पंक्ति में खड़े हो गए। सन् 1894 ई. में "होनहार बिरवार के चिकने-चिकने पात" नामक नाटक की रचना की। सन् 1898 में एक उपन्यास लिखा। लगभग इसी समय "रुठी रानी" नामक दूसरा उपन्यास जिसका विषय इतिहास था की रचना की। सन 1902 में प्रेमा और सन् 1904-05 में "हम खुर्मा व हम सवाब" नामक उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासों में विधवा-जीवन और विधवा-समस्या का चित्रण प्रेमचन्द ने काफी अच्छे ढंग से किया।

जब कुछ आर्थिक निर्जिंश्चतता आई तो 1907 में पाँच कहानियों का संग्रह सोड़ो वतन (वतन का दुख दर्द) की रचना की। जैसा कि इसके नाम से ही मालूम होता है, इसमें देश प्रेम और देश को जनता के दर्द को रचनाकार ने प्रस्तुत किया। अंग्रेज शासकों को इस संग्रह से बगावत की झलक मालूम हुई। इस समय प्रेमचन्द नायाबराय के नाम से लिखा करते थे। लिहाजा नायाब राय की खोज शुरु हुई। नायाबराय पकड़ लिये गए और शासक के सामने बुलाया गया। उस दिन आपके सामने ही आपकी इस कृति को अंग्रेजी शासकों ने जला दिया और बिना आज्ञा न लिखने का बंधन लगा दिया गया।

इस बंधन से बचने के लिए प्रेमचन्द ने दयानारायण निगम को पत्र लिखा और उनको बताया कि वह अब कभी नयाबराय या धनपतराय के नाम से नहीं लिखेंगे तो मुंशी दयानारायण निगम ने पहली बार प्रेमचन्द नाम सुझाया। यहीं से धनपतराय हमेशा के लिए प्रेमचन्द हो गये।

"सेवा सदन", "मिल मजदूर" तथा 1935 में गोदान की रचना की। गोदान आपकी समस्त रचनाओं में सबसे ज्यादा मशहूर हुई अपनी जिन्दगी के आखिरी सफर में मंगलसूत्र नामक अंतिम उपन्यास लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्यवश मंगलसूत्र को अधूरा ही छोड़ गये। इससे पहले उन्होंने महाजनी और पूँजीवादी युग प्रवृत्ति की निन्दा करते हुए "महाजनी सभ्यता" नाम से एक लेख भी लिखा था।

मृत्यु

सन् 1936 ई० में प्रेमचन्द बीमार रहने लगे। अपने इस बीमार काल में ही आपने "प्रगतिशील लेखक संघ" की स्थापना में सहयोग दिया। आर्थिक कष्टों तथा इलाज ठीक से न कराये जाने के कारण 8 अक्टूबर 1936 में आपका देहान्त हो गया। और इस तरह वह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने अपनी जीवन की बत्ती को कण-कण जलाकर भारतीयों का पथ आलोकित किया।

'आहार – 2015' में एमपीईडीए

भारत में दिनांक 10-14 मार्च, 2015 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में खाद्य एवं आतिथ्य पर आयोजित 'आहार 2015' बड़े मेलों में से एक है। यह भारत व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) द्वारा आयोजित किया गया था। मेले ने दो अलग-अलग परंतु समवर्ती प्रदर्शन को प्रदर्शित किया। 'हासपिटेलिटी इण्डिया' में होटलों तथा रेस्तोराँ के साज़-सामानों व आपूर्तियों को और 'फूड इण्डिया' में खाद्य, परिसंशोधित खाद्य, खाद्य संसाधन एवं पेय सम्मिलित हैं। इस प्रदर्शन में भारत से 800 से भी अधिक प्रदर्शकों ने तथा 22 देशों ने भाग लिया।

उद्यमकर्ताओं को विभिन्न खरीददारों एवं विक्रेताओं के सामने अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने हेतु इस प्रदर्शन द्वारा सहायता मिली। यह अनेक कृषि एवं उद्यानकृषि उत्पादों के आधिक्य एवं अपूर्ण क्षेत्रों को चालू योजना के तहत प्रसंसाधन सुविधाओं के विन्यास हेतु प्रसंसाधिन समूह को पहचानने का उद्देश्य भी रखती है। आहार 2015 में प्रदर्शनी पार्श्वचित्र भिन्न खण्डों में पृथक्कृत किया गया था जिसमें गृह-व्यवस्था, मशीनरी उपकरण तथा खाद्य उपादान व योगज आदि सम्मिलित थे। ''कलीनरी आर्ट इण्डिया'' के अतिरिक्त 300 से भी अधिक रसोइयों के बीच एक लाइव प्रतियोगिता, 'चैलेंजस-फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री', ऑर्गानिक फूड सिनारियो एण्ड ऑब्स्टकल्स' पर संगोष्ठियाँ तथा पोलैण्ड सरकार द्वारा कृषि संबन्धित विषय भी मेले में आयोजित किए गए।

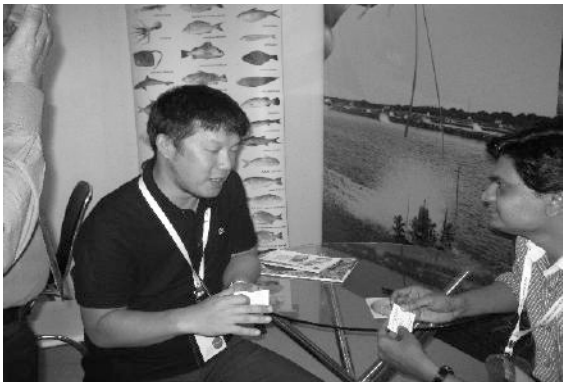

एमपीईडीए की व्यापार संवर्धन कार्यालय, नई दिल्ली ने 12 वर्ग. मी. की जगह का स्टाल लेकर इस प्रदर्शन में भाग लिया और हॉल सं. 15 अत्यंत आकर्षणीय तरीके से सजाई गई थी जो अगंतुकों के लिए देखने लायक स्टॉल बनी रही।

एमपीईडीए ने मूल्यवान प्रकाशन तथा खाने लायक तैयार पदार्थ जैसे फिश बिरयानी, प्रान-पुलाव, भभका थैली-बंद कढ़ी जैसे- अमृतसरी, मुग़लई, कश्मीरी, गोवन, केरला श्रिम्प कढ़ियां, श्रिम्प/फिश/स्क्विड आचार, तेल व ब्राइन में भभका थैली-बंद ट्यूना आदि का प्रदर्शन किया। स्टॉल में इस तरह की अनोखी प्रदर्शनी आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी।

उपरोक्त मेले में एमपीईडीए की सहभागिता श्री वी आई हकीम, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, वेरावल तथा श्री ओम प्रकाश काइस्था, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, टीपीओ, नई दिल्ली द्वारा सुनिश्चित की गई।

सफलता की कहानियां मत पढ़ो उससे आपको केवल एक सन्देश मिलेगा। असफलता की कहानियां पढ़ो उससे आपको सफल होने के कुछ विचार मिलेंगे।
- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

बेपोर, केरल में नेटफिश द्वारा आयोजित 'वन वीक एट ए हॉर्बर'

बेपोर पत्तन, कोषीकोड जिले में स्थित उत्तर केरल की मुख्य मत्स्य पत्तनों में से एक है। इसके अनेक पदार्थों का निर्यात जैसे कि - स्क्विड एवं कट्टलफिश दैनिक अवतरण में प्रमुख है। तथापि, पत्तन की सामान्य स्वास्थ्यकर मानकों में सुधार की आवस्यकता है। इसे मद्देनजर रखते हुए, नेटफिश ने बेपोर पत्तन में पत्तन के सामान्य मानकों में सुधार लाने हेतु प्रभावशाली और तीव्र जागरूकता अभियान आयोजित करने का निर्णय लिया। दिनांक 2 से 5 फरवरी, 2015 तक नेटफिश द्वारा 'वन वीक एट ए हॉर्बर' कार्यक्रम बेपोर फिशिंग हॉर्बर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है:

1. बेपोर मत्स्यन पत्तन में मत्स्य पकड़ना, बर्फ संभालना तथा स्वच्छता के मानकों में सुधार लाना
2. पत्तन के हर एक मत्स्य मज़दूरों तक पहुंचना तथा उनको नेटफिश के 4 दिनों के विस्तृत कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित करना
3. मत्स्य गुणवत्ता तथा निर्यात के प्रति लोगों के मनोभाव को बदलना
4. विस्तृत कार्यक्रम को आयोजित करने के नए मार्गों का अन्वेषण तथा शीघ्र गामी वांछित फलितांश को प्राप्त करना

पत्तन में विभिन्न प्रकार के निरंतर कार्यक्रम 4 दिनों की अवधि के लिए 'वन वीक एट ए हॉर्बर' ने पणधारी के दिल और दिमाग में सकारात्मक परिवेश को निर्माण करने का लक्ष्य रखा। कार्यक्रम में पत्तन व नाव की सफाई, मछुअरों के लिए उचित चिकित्सा कैंप, विविध विषयों पर जागरूकता के लिए कक्षाएँ, मलयालम व बंगाली भाषा में लघु चलचित्र प्रदर्शित करना, मलयालम, बंगाली, हिन्दी, तमिल व अंग्रेज़ी भाषाओं में पोस्टरों को प्रदर्शित करना, नुक्कड़-नाटक, एमपीईडीए नौका पंजीकरण सुविधा तथा मछुअरों के लिए मात्स्यिकी सहायक मदों का वितरण भी सम्मिलित था। सभी गतिविधियों के संचित प्रभाव ने पत्तन की गुणवत्ता तथा प्रचालन मानकों में एक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई।

श्री एम.के.राघवन, संसद सदस्य, कोषीकोड द्वारा दिनांक 2 फरवरी, 2015 को श्रीमती पी.जलजा, सभासद् कोषीकोड कॉर्पोरेशन की अध्यक्षता में पत्तन के परिसर में आयोजित समारोह में कैंप का उदघाटन किया। डॉ. जोइस वी थॉमस, मुख्य कार्यकारी, नेटफिश ने उदघाटन समारोह में श्रोतागण का स्वागत किया। पत्तन में श्री के एन विमल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची, हॉर्बर इंजीनियरिंग प्रभाग, मात्स्यिकी विभाग, कोस्ट गार्ड के अधिकारियों, अन्य मजदूर संघों के प्रतिनिधियों एवं विविध पणधारियों के समूह प्रतिनिधियों ने इस अवसर पर बधाई भाषण दिया। श्री संतोष एन के, राज्य समन्वयी, नेटफिश ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस समारोह में दो सौ से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

एमपीईडीए - क्लब की वित्तीय वर्ष 2014-15 में गतिविधियां

स्वतन्त्रता दिवस - 15.08.2014

ध्वजारोहण - अध्यक्ष महोदया द्वारा

दिनांक 15 अगस्त, 2014 को एमपीईडीए ने 68 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए ने इस अवसर पर एमपीईडीए के प्रांगण में ध्वज फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जिसके उपरांत "स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष" के विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी रखी गई। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार राशि भी वितरित की गई।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - सम्मेलन कक्ष में

एमपीईडीए दिवस – 24.08.2014

दीप प्रज्जवलन - अध्यक्ष महोदया एवं आमंत्रित मुख्य अथिति गण

मुख्य अतिथि - श्री एम.जी.राजमणिक्कम, भा.प्र.से, जिला कलेक्टर, एर्नाकुलम तथा कुमारी मृण्मयी, भा.प्र.से., सहायक जिला कलेक्टर, एर्नाकुलम

सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिनांक 24 अगस्त, 2014 को रोटरी क्लब बालभवन, पनंपिल्ली नगर के हॉल में एमपीईडीए दिवस का आयोजन किया गया। श्री एम.जी.राजमणिक्कम, भा.प्र.से, जिला कलेक्टर, एर्नाकुलम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कुमारी मृण्मयी जोशी, सहायक कलेक्टर भी इस कार्यक्रम की आमंत्रित अथिति-सदस्य थी। लगभग 600 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें अधिकरियों/कर्मचारियों के साथ उनके परिवार के सदस्य भी सम्मिलित थे। उद्घाटन के पश्चात भोजन तथा मनोरंजन का प्रबंध भी किया गया। प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले हुए छोटे बच्चों को उपहार भी दिया गया। एमपीईडीए दिवस से सम्बंधित मराइन क्वेस्ट 2014 भी आयोजित किया गया था। 100 से भी अधिक विद्यालयों के छात्रों ने राज्य के अनेक जगहों से भाग लिया। अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए द्वारा पुरस्कारों का वितरण किया गया।

ओनम दिवस – 05.09.2014

दीप प्रज्जवलन

महाबली

महाबली का स्वागत करती हुई अध्यक्ष महोदया के साथ महिला कर्मचारी

अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ ओनम दिवस शुरु किया गया। परम्परागत तरीके से प्रांगण को फूलों (कुरुथोल्ला) से सजाकर तथा 'इला अडा' नामक प्रसिद्ध केरल भोजन परोसकर महाबली का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को चार समूहों में विभाजित किया गया और पूकलम (फूलों से रचित) प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 'ओणसद्या' भोजन का प्रबंध किया गया था, जिसके उपरांत वेजिटेबल कार्विंग / फ्लावर एरेंजमेंट की प्रतियोगिता रखी गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन

मंगलयान जीत – 25.09.2014

मंगल ग्रह मिशन की ऐतिहासिक जीत – मंगलयान, एमपीईडीए ने अभिमान के साथ मिशन की सफलता से सम्बंधित सभी लोगों को इस अवसर पर अभिनंदन व्यक्त करते हुए गौरव के क्षणों को मनाया। एमपीईडीए तथा स्टॉफ क्लब ने मिलकर सभी अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए भोजन का प्रबंध किया। मिशन के वीरों को अभिनंदन व्यक्त करने हेतु एक बैनर भी एमपीईडीए के मुख्य द्वार पर प्रदर्शित किया गया था।

स्वच्छ भारत अभियान – 02.10.2014

एमपीईडीए ने 'क्लीन इंडिया मिशन' नामक एक राष्ट्रीय स्वच्छ भारत अभियान, गांधी जयंती- 2014 के दिन पूर्वाह्न को शुरु किया। एमपीईडीए की सभी इकाइयों ने भी इस अवसर पर अपने सम्बंधित कार्यालयों की सफाई करते हुए भाग लिया। अधिकारियों ने मुख्यालय के आस-पास की जगहों तथा सामने की सड़कों पर सफाई की।

एमपीईडीए प्रांगण में सचिव महोदय के साथ भारत को स्वच्छ रखने हेतु प्रतिज्ञा लेते हुए सभी कर्मचारी

कार्यालय तथा कार्यालय के सामने सफाई करते हुए कर्मचारी

राष्ट्रीय एकता दिवस – 31.10.2014

सरदार वल्लभाई पटेल के जन्मदिवस पर भारत सरकार ने "रन फॉर यूनिटी" नामक एक कार्यक्रम के आयोजन की घोषणा की। एमपीईडीए के कर्मचारियों ने एमपीईडीए-मुख्यालय से मनोरमा जंक्शन तक 2.5 कि.मी. की लघु दौड़ लगाकर इस कार्यक्रम में भाग लिया। अध्यक्ष महोदया ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और लगभग 40 कर्मचारियों ने इस अवसर पर भाग लिया।

विश्व शौचालय दिवस -19.11.2014

दिनांक 19 नवम्बर, 2014 को विश्व शौचालय दिवस के संदर्भ में एमपीईडीए – मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय तथा क्षेत्रीय केंद्र, कोच्ची ने सरकारी शाला, पनंपिल्ली नगर में सफाइ कार्यक्रम में भाग लिया।

क्रिसमस / नव-वर्ष 2015 - 01.01.2015

अध्यक्ष महोदया द्वारा छठवें तल का उद्घाटन तथा नया वर्ष समारोह

हर वर्ष की तरह संदर्भित वर्ष में भी नए वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर केक काटकर किया गया तथा एमपीईडीए के सभी कर्मचारियों के लिए भोजन का प्रबंध भी किया गया। अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए ने इस शुभ दिवस पर छठवें तल के हॉल का उद्घाटन भी किया।

नव-वर्ष कार्यक्रम में भाग लेते हुए कर्मचारी

ग्रीन अभियान – 23.01.2015

एमपीईडीए ने अपने प्रांगण में ऑरगैनिक/सहज तरकारियों की देखरेख हेतु स्टॉफ क्लब द्वारा एक समिति का गठन किया। ग्रीन अभियान की शुरुआत, विविध तरकारियों की 50 थैलियों की खरीद के साथ की गई। एमपीईडीए के कर्मचारियों के बीच बोली लगाकर इसकी बिक्री की गई।

गणराज्य दिवस – 26.01.2015

ध्वजारोहण - अध्यक्ष महोदया द्वारा

अध्यक्ष महोदया, एमपीईडीए ने इस दिवस पर एमपीईडीए के प्रांगण में ध्वज फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदया ने ग्रीन अभियान की शुरुआत के लिए बधाई भी दी।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21.06.2015

दिनांक 21 जून, 2015 को एमपीईडीए ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। सभी अधिकारियों ने एमपीईडीए के प्रांगण में पूर्वाह्न प्रशिक्षक श्री राजीव नायर के मार्गदर्शन में योगाभ्यास किया।

एमपीईडीए की सेवा निवृत्तियां

श्री टी.पी. उषार, डेटा एंट्री ऑपरेटर, ई.डी.पी अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
अक्तूबर-2014

श्रीमती आईवी बर्नडेट, सहायक निदेशक (ई.पी), एमपीईडीए-मुख्यालय
नवम्बर-2014

श्रीमती टी.पी. विनीता, अनुभाग अधिकारी, ए व आइ अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
नवम्बर-2014

श्रीमती ई. शांताकुमारी, सहायक, जलकृषि अनुभाग, एमपीईडीए-मुख्यालय
नवम्बर-2014

श्री जे.वी.गोपी, कार्यवाहक, प्रशासन अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
नवम्बर-2014

श्री टी.हरीहरन, हैचरी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची
नवम्बर-2014

श्री रमाकांत ए.पई, तकनीकी सहायक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर
जनवरी-2015

श्री के.रविचंद्रन, तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई
जनवरी-2015

श्री आसिम केआर मोण्डल, तकनीकी सहायक, क्षत्रीय कार्यालय, विशाखपट्टनम
जनवरी-2015

श्रीमती आइशा अयप्पन, कनिष्ठ अधीक्षक, कार्मिक अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
मार्च-2015

श्री के.वेंकट रेड्डी, कनिष्ठ लिपिक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, भीमावरम
मार्च-2015

श्री वी.के.बालचंद्रन, कनिष्ठ अधीक्षक, लेखा अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
अप्रैल-2015

श्री सी.वी.प्रभाकरन, कनिष्ठ अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता
अप्रैल-2015

श्री बी.विष्णु भट, संयुक्त निदेशक, जलकृषि अनुभाग, एमपीईडीए-मुख्यालय
मई -2015

श्री जार्ज पी.थॉमस, सहायक सांख्यिकी अनुभाग, एमपीईडीए-मुख्यालय
मई -2015

श्री एस. विजयकुमार, सहायक निदेशक, जलकृषि अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय
जून -2015

श्रीमती के.चंद्रिका, लेखा सहायक, क्षेत्रीय केंद्र, नागपट्टनम
जुलाई -2015

एमपीईडीए की नई भर्तियाँ

सितम्बर-2014

श्री वी.एन. बिजू, सहायक निदेशक,
एमपीईडीए-आर.जी.सी.ए

सितम्बर-2014

श्री ए. शक्तिवेल, सहायक निदेशक,
उप क्षेत्रीय कार्यालय, पोरबंदर

सितम्बर-2014

श्रीमती अंजू, सहायक निदेशक, आलंकारिक
मत्स्य अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय

सितम्बर-2014

श्री श्रीजित.पी.टी, सहायक निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

दिसम्बर-2014

श्रीमती बिजी.के.बी, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी
(गु.नि.), उप क्षेत्रीय कार्यालय, भीमावरम

दिसम्बर-2014

श्रीमती सबिता.टी.यू, कनिष्ठ तकनीकी
अधिकारी (गु.नि.) प्रयोगशाला, भीमावरम

दिसम्बर-2014

श्रीमती बीबी.वी.सी, कनिष्ठ तकनीकी
अधिकारी (गु.नि),प्रयोगशाला, नेल्लूर

दिसम्बर-2014

श्री सौमेंदु सरकार, लेखा अधिकारी,
लेखा अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय

जनवरी-2015

श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा)
राजभाषा अनुभाग,एमपीईडीए-मुख्यालय

जीवन - एक माया-जाल

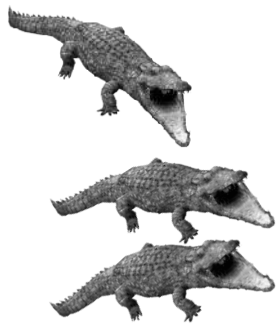

दिनेश कुरुपात
वरिष्ठ लिपिक,
एमपीईडीए - मुख्यालय

एक इंसान घने जंगल में भागा जा रहा था। शाम हो गई थी। अंधेरे में कुआं दिखाई नहीं दिया और वह उसमें गिर गया। गिरते-गिरते कुएं पर झुके पेड़ की एक डाल उसके हाथ में आ गई। जब उसने नीचे झांका, तो देखा कि कुएं में चार अजगर मुंह खोले उसे देख रहे हैं और जिस डाल को वह पकड़े हुए था, उसे दो चूहे कुतर रहे थे। इतने में एक हाथी आया और पेड़ को जोर-जोर से हिलाने लगा। वह घबरा गया और सोचने लगा कि हे भगवान अब क्या होगा। उसी पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता लगा था। हाथी के पेड़ को हिलाने से मधुमक्खियां उडऩे लगीं और शहद की बूंदें टपकने लगीं। एक बूंद उसके होठों पर आ गिरी। उसने प्यास से सूख रही जीभ को होठों पर फेरा, तो शहद की उस बूंद में गजब की मिठास थी। कुछ पल बाद फिर शहद की एक और बूंद उसके मुंह में टपकी। अब वह इतना मगन हो गया कि अपनी मुश्किलों को भूल गया।

तभी उस जंगल से शिव और पार्वती अपने वाहन से गुजर रहे थे। पार्वती ने शिव से उसे बचाने का अनुरोध किया। भगवान शिव ने उसके पास जाकर कहा - मैं तुम्हें बचाना चाहता हूं। मेरा हाथ पकड़ लो। उस इंसान ने कहा कि एक बूंद शहद और चाट लूं फिर चलता हूँ। एक बूंद, फिर एक बूंद और हर एक बूंद के बाद अगली बूंद का इंतजार। आखिर थक-हारकर शिवजी चले गए।

वह जिस जंगल में जा रहा था, वह जंगल है दुनिया और अंधेरा है अज्ञान। पेड़ की डाली है आयु। दिन-रात रूपी चूहे उसे कुतर रहे हैं। घमंड का मदमस्त हाथी पेड़ को उखाडऩे में लगा है। शहद की बूंदें सांसारिक सुख हैं, जिनके कारण मनुष्य खतरे को भी अनदेखा कर देता है। यानी, सुख की माया में खोए मन को भगवान भी नहीं बचा सकते।

झींगा, पनीर और टमाटर के साथ सेमिया पास्ता

यह एक स्वादिष्ट और तुरंत पकने वाला पास्ता पकवान है। झींगा, पनीर, टमाटर और नींबू के रस के ज़ायके के साथ ये एक दूसरे के पूरक हैं।

तैयारी के लिए समय: 10 मिनट
पकाने के लिए समय: 10 मिनट

समय की बचत युक्तियाँ: पहले से ही छीले हुए और साफ झींगे का इस्तेमाल करें, इससे समय की काफी बचत होगी। लहसुन के दानों के बदले पेस्ट भी इस्तेमाल कर सकते है।

सामग्री: 4 लोगों के लिए

2 चम्मच जैतून/ऑलिव का तेल
3 लहसुन के दानों का पेस्ट
1/4 कप ह्वाइट वाइन
2 बड़े चम्मच नींबू का रस
1/2 चम्मच अजवायन की पत्ती,
एक पाउंड बड़े झींगे (छीले हुए और साफ)
2 आउंस पनीर के टुकड़े
2 बडी चम्मच सूखी अजवाईन
8 आउंस सेमिया पास्ता
दो पकाए हुए (14 1/2- आउंस) टमाटर के सूखे टुकड़े भाप लगाए हुए।

पकाने की विधि:
(1) एक कढ़ाई में जैतून का तेल गरम कीजिए। लहसुन डालकर 2-3 मिनट पकाएं।
(2) वाइन, नींबू का रस, टमाटर, अजवाईन की पत्ती और झींगा डालकर लगभग 4-5 मिनट तक अच्छी तरह से पका लें।
(3) अब पनीर डालकर उसको भी हल्का सा पका लें।
(4) पहले से ही अलग पकाए हुए सेमिए को इसमें मिला कर 2 मिनट भाप लगाएं। ऊपर हरे धनिए के पत्तों को छिड़क दें।

साइड डिश के लिए सुझाव:
हरा सलाद , फ्रांसीसी या इतालवी रोटी

पोषण सामग्री
कैलोरी - 434, कुल वसा – 8 ग्रा, संतृप्त वसा - 3 ग्रा ,
कोलेस्ट्रॉल -152 मि. ग्रा., सोडियम – 1012 मि. ग्रा.,
कुल कार्बोहाइड्रेट -62 , ग्रा, आहार फाइबर – 6, ग्रा,
प्रोटीन – 31, ग्रा, विटामिन सी - 29%, आइऑन - 25%,
कैल्शियम - 14%, विटामिन ए - 23%

दैनिक आधार पर 2000 कैलोरी आहार।

पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता आदि के माध्यम से व्यक्त किए गए विचारों, रचना की मौलिकता, कॉपीराइट आदि के लिए सम्बंधित लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं। पत्रिका में व्यक्त विचारों से सम्पादक मंडल या संगठन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है तथा इनके प्रकाशन से उत्पन्न होनेवाले किसी भी वाद के लिए सम्पादक मंडल अथवा संगठन जिम्मेदार नहीं है।

केवल आंतरिक परिचालनार्थ | बिक्री हेतु नहीं

कलाम को सलाम

देश के 11वें राष्ट्रपति और मिसाइल मैन के नाम से मशहूर हुए डॉ. अबुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम।

अपने पिता की मदद के लिए स्कूल के बाद अखबार बांटा करते थे।

देश के पहले सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल के प्रोजेक्ट निदेशक थे, जिन्होनें 1960 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की ऑरबिट में स्थापित किया।

पोखरण - II परमाणु परीक्षण के दौरान माननीय कलाम महोदय चीफ प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर थे।

डॉ. सोमा राजू के साथ मिलकर कलाम-राजू स्टंट नाम से सस्ता कोरोनरी स्टंट बनाया।

40 विश्वविद्यालयों ने उन्हे डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि दी। उन्हे पद्म भूषण, पद्म विभूषण और भारत रत्न से भी नवाज़ा जा चुका है।

श्रद्धांजलि

15 अक्तूबर 1931 - 27 जुलाई 2015

"ख्वाब वो नहीं होते, जो आप सोते वक्त देखते हैं,
बल्कि ख्वाब वो होते हैं, जो आपको सोने नहीं देते"